

# कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन सोमवार, 2 फरवरी 2026

वर्ष-26

अंक-19

मूल्य-12/-

कुल पृष्ठ-12

www.krishakjagat.org

पृष्ठ-1

कृषक जगत न्यूज वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें



अंदर पढ़िये...



फसल में सल्फर का महत्व



संतरे की उन्नत खेती

केन्द्रीय बजट  
2026-27 में

## कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र के लिए 1 लाख 62 हजार करोड़ से अधिक का प्रावधान



नई दिल्ली। केन्द्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने संसद में केन्द्रीय बजट 2026-27 पेश करते हुए कहा कि बजट में उभरती प्रौद्योगिकियों को और एआई को आम नागरिक की आकांक्षाओं को पूरा करने और भारत की समृद्धि के पथ पर उन्हें सशक्त प्रतिभागी बनाने के लिए तथा उनके क्षमता निर्माण को मुख्य घटक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। केन्द्रीय बजट 2026-27 एआई मिशन, नेशनल क्वांटम मिशन, अनुसंधान नेशनल रिसर्च फंड और अनुसंधान विकास एवं नवाचार निधि के माध्यम से नई प्रौद्योगिकियों को सहायता प्रदान करना, सरकार की मुख्य पहल है। बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए रु. 1,62,671 करोड़ का प्रावधान किया गया है, जो मुख्य रूप से उच्च-मूल्य वाली फसलों ( नारियल, काजू, चंदन ), तकनीकी विकास, और डिजिटल खेती (AI-आधारित 'भारत विस्तार') पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना है। निरंतर...

### बजट 2026-27 के मुख्य कृषि आकर्षण

**कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र :** कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों के लिए रु. 1,62,671 करोड़ आवंटित, जबकि ग्रामीण विकास के लिए रु. 2,73,108 करोड़ रखे गए हैं।

**उच्च-मूल्य वाली फसलें :** कोकोनट, काजू, चंदन और कोको जैसी फसलों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन।

**डिजिटल कृषि ( भारत विस्तार ) :** एआई आधारित 'भारत विस्तार' सिस्टम से किसानों को सही समय पर, अपनी भाषा में, और सही जानकारी मिलेगी (रु. 150 करोड़ का आवंटन)।

**फसल विविधीकरण :** नकदी फसलों की ओर जाने पर जोर।

**मत्स्य पालन एवं पशुपालन :** समुद्री तटीय क्षेत्रों में मत्स्य पालन श्रृंखला और पशुपालन में निवेश को बढ़ावा।

**अमृत सरोवर :** पानी के भंडारण के लिए 500 जलाशयों का विकास किया जाएगा।

पीएम-किसान, फसल बीमा योजना, और सिंचाई योजनाओं के लिए आवंटन जारी रहेगा।

### भारत-यूरोपियन यूनियन में समझौता

## किसानों, कृषि उत्पादों के लिए खुलेंगे नए अवसरों के द्वार : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केन्द्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने रायपुर में भारत और यूरोपियन यूनियन के बीच हुए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यह समझौता केवल एक व्यापारिक करार नहीं, बल्कि भारत के बढ़ते वैश्विक नेतृत्व और आर्थिक सामर्थ्य का प्रतीक है।



उन्होंने कहा कि भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है, जो भारत-यूरोपीय संघ साझेदारी को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। भारत के लिए महत्वपूर्ण कृषि उत्पाद-जैसे चाय, कॉफी, मसाले, टेबल अंगूर, खीरा और अचार वाली खीरा, सूखे प्याज, मीठा मक्का, चुनिंदा फल-सब्जियां और प्रोसेस्ड फूड को इस समझौते से बड़ा लाभ होगा। प्रमुख क्षेत्रों में आपसी संवेदनशीलता का सम्मान करते हुए यह

समझौता निर्यात वृद्धि को घरेलू प्राथमिकताओं के साथ संतुलित करता है और दोनों पक्षों के किसान समुदायों के लिए लाभ सुनिश्चित करता है। भारतीय कृषि के लिए यह एक बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि यह समझौता भारतीय किसानों, कृषि उत्पादों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगा। भारत की कृषि शक्ति आज विश्व के सामने है-भारत चावल उत्पादन में पहले स्थान पर पहुंच चुका है

और हमारी कृषि विकास दर ने हरित क्रांति के दौर को भी पीछे छोड़ दिया है। फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर विस्तार से बात करते हुए श्री चौहान ने कहा कि भारत-यूरोपियन यूनियन के बीच हुआ यह समझौता कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, निर्यात और निवेश के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगा। इससे भारतीय कृषि उत्पादों को यूरोपीय बाजारों में बेहतर पहुंच मिलेगी, किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलेगा।

स्टील उपकरण, लाए परिवर्तन

**STIHL**

100 YEARS

साफ खेतों के पीछे की असली ताकत

पावर वीडर MH 210

पूरी 5 इंजन हल्का वजन सुरक्षात्मक टॉप कवर उपयोग में अनुकूल

Call or Whatsapp 9028411222

www.stihl.in German Quality and Innovation

**पहला कर्तव्य** - उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा बढ़ाने तथा वैश्विक उथल-पुथल के परिदृश्य में लचीलापन लाकर आर्थिक विकास को तेज करना और उसकी गति बनाए रखना

**दूसरा कर्तव्य**- भारत की समृद्धि के पथ में सशक्त साझेदार बनाने के लिए लोगों की आकांक्षाएं पूरी करना और उनकी क्षमता बढ़ाना।

**तीसरा कर्तव्य** - सरकार की सबका साथ, सबका विकास के दृष्टिकोण के अनुकूल- यह सुनिश्चित करना कि सार्विक भागीदारी के लिए प्रत्येक परिवार, समुदाय और क्षेत्र की संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों तक पहुंच उपलब्ध हो।

### काजू, कोको के लिए बनेंगे कार्यक्रम



वित्त मंत्री ने कहा कि तटीय इलाकों में नारियल, चंदन, काजू जैसी फसलों को सहायता दी जाएगी। नारियल उत्पादन में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए नारियल संवर्धन योजना लाई जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय काजू और कोको के लिए समर्पित कार्यक्रम लाए जाएंगे। इन्हें वैश्विक ब्रांड बनाने का काम किया जाएगा। भारतीय चंदन लकड़ी की गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए राज्यों से सहयोग किया जाएगा। वहीं अखरोट, बादाम की पैदावार बढ़ाने के लिए भी विशेष कार्यक्रम शुरू होगा।

## केन्द्रीय बजट तीन कर्तव्यों से प्रेरित

### भारत-VISTAAR कार्यक्रम शुरू होगा

वित्त मंत्री ने बताया कि एआई टूल- भारत-विस्तार कार्यक्रम की शुरुआत होगी। यह बहुभाषी एआई टूल किसानों को बेहतर फैसले लेने में मदद करेगा, जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ेगी। उन्होंने यह भी बताया कि ग्रामीण महिलाओं की अगुवाई वाले उद्यमों के लिए स्व-सहायता उद्यम (SHE-Marts) शुरू किए जाएंगे।

### सहकारिता

दूध, तिलहन, फल या सब्जियों की आपूर्ति में लगी प्राथमिक सहकारी संस्थाओं को पहले से उपलब्ध कटौती का विस्तार अब पशुचारे और बिनौले की आपूर्ति करने वालों तक भी किया गया है। किसी अधिसूचित राष्ट्रीय सहकारी संघ द्वारा दिनांक 31 जनवरी 2026 तक कंपनियों में दिए गए उनके निवेश पर प्राप्त लाभांश आय पर तीन वर्ष की अवधि के लिए छूट देने का प्रस्ताव।

### पशुपालन के लिए लोन-आधारित सब्सिडी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि स्टार्टअप और महिलाओं की अगुवाई वाले समूह बाजार से जुड़ेंगे। जबकि पशुपालन क्षेत्र के लिए लोन-आधारित सब्सिडी कार्यक्रम शुरू होंगे।



पुशधन उद्यमों का संवर्धन और आधुनिकीकरण होगा। पशुधन किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा दिया जाएगा।

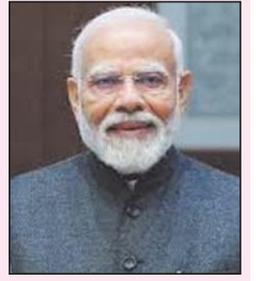
सरकार 20 हजार से अधिक पशु डॉक्टरों की उपलब्धता करेगी। निजी क्षेत्र में पशु रोग विशेषज्ञ और पैरा पशु शल्य महाविद्यालय, पशु अस्पताल, प्रयोगशालाओं और प्रजनन सुविधाओं के लिए ऋण संबद्ध पूंजी सब्सिडी सहायता योजना शुरू करने का प्रस्ताव।

### सिंचाई पर भी ध्यान

सिंचाई पर भी ध्यान दिया गया है, क्योंकि अच्छी सिंचाई के बिना उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती मुश्किल होती है। सरकार पहले से ही पीएम कृषि सिंचाई योजना चला रही है और इस बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने से पानी की उपलब्धता बढ़ेगी। इससे फसलें बेहतर होंगी और सूखे या बाढ़ का खतरा कम होगा।

ये घोषणाएं किसानों की आय दोगुनी करने के सपने को करीब ला रही हैं। छोटे किसान जो अब तक सिर्फ अनाज या सब्जियां उगाते थे, वे अब हाई-वैल्यू क्रॉप्स में जा सकेंगे। इससे ग्रामीण रोजगार बढ़ेगा, निर्यात बढ़ेगा और अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

विकसित भारत बनाने के बजट में कृषि, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन को सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस बजट में नारियल, काजू, कोको और चंदन के उत्पादन में लगे किसानों के लिए महत्वपूर्ण उपाय किए गए हैं। भारत विस्तार एआई टूल किसानों को उनकी अपनी भाषा में जानकारी उपलब्ध कराकर उनकी बहुत मदद करेगा।



- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत इस बजट में वी बी-जी राम जी योजना में नरेगा की तुलना में 86 हजार करोड़ से बढ़ाकर 95 हजार 692 करोड़ राशि का आवंटन किया गया है। राजस्थान को इससे अतिरिक्त राशि मिलेगी। उन्होंने कहा कि पशुपालन राजस्थान की अर्थव्यवस्था का प्रमुख हिस्सा है। बजट में दी गई लोन लिंकड केपिटल इन्वेस्टमेंट सब्सिडी स्कीम का पशुपालकों को भरपूर लाभ मिलेगा।

- भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री, राजस्थान

## कृषि- पशुपालन क्षेत्र के पद्मश्री पुरस्कार विजेता 2026

नई दिल्ली (कृषक जगत)। पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं, जो तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं- पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री। ये पुरस्कार कृषि, कला, सामाजिक कार्य, सार्वजनिक मामलों, विज्ञान और इंजीनियरिंग, व्यापार और उद्योग, चिकित्सा, साहित्य और शिक्षा, खेल, सिविल सेवा आदि विभिन्न क्षेत्रों में दिए जाते हैं। पद्म विभूषण असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए, पद्म भूषण उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए और पद्मश्री किसी भी क्षेत्र में

### डॉ. ए.के. सिंह : बासमती चावल की 25 उन्नत किस्मों के जनक



चावल और बासमती प्रजनन के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान के लिए डॉ. ए.के. सिंह को पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। वह पादप आनुवांशिकी के विशेषज्ञ हैं और लगभग तीन दशकों तक ICAR-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) से जुड़े रहे। IARI के पूर्व निदेशक रहे डॉ. सिंह ने बासमती चावल की 25 उन्नत किस्मों के विकास में अहम भूमिका निभाई। उनकी विकसित किस्मों से हर साल करीब 50 हजार करोड़ रुपये का विदेशी मुद्रा राजस्व अर्जित हो रहा है।

### डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी : लीची उत्पादन में क्रांति

बिहार के डॉ. गोपाल जी त्रिवेदी को पारंपरिक ज्ञान आधारित खेती और कृषि विस्तार सेवाओं में योगदान के लिए पद्मश्री मिला है। उन्होंने लीची के पुराने बागानों में कैनोपी मैनेजमेंट तकनीक को अपनाया, जिससे पेड़ों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और किसानों की आय दोगुनी हो गई। उन्होंने जल-



जमाव वाले इलाकों में मखाना और सिंघाड़े की व्यावसायिक खेती को भी बढ़ावा दिया। उनके प्रयासों से बिहार कृषि नवाचारों का महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा है।

### डॉ. के. रामासामी : टिकाऊ और प्राकृतिक खेती के अग्रदूत

तमिलनाडु के डॉ. के. रामासामी को टिकाऊ खेती और किसान-नेतृत्व वाले नवाचारों के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उन्होंने कृषि जैव-प्रौद्योगिकी, फर्टी-इरिगेशन, बायोगैस और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई।

डॉ. रामासामी ने 30 से अधिक अनुसंधान परियोजनाओं का नेतृत्व किया, जिससे वैज्ञानिक शोध सीधे खेतों तक पहुंचा और किसानों को व्यावहारिक लाभ मिला।

### डॉ. प्रेम लाल गौतम : पादप आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षक

हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. प्रेम लाल गौतम को पादप आनुवांशिकी, फसल सुधार और जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्र में योगदान के लिए पद्मश्री मिला



विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। इन पुरस्कारों की घोषणा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। ये पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोहों में प्रदान किए जाते हैं, वर्ष 2026 के लिए, राष्ट्रपति ने 131 पद्म पुरस्कारों के प्रदान करने की स्वीकृति दी है, जिनमें 2 युगल पुरस्कार ( युगल पुरस्कार को एक ही माना जाता है) शामिल हैं, सूची में 5 पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्मश्री पुरस्कार शामिल हैं।

हैं। उन्होंने पौधों के आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ भारतीय कृषि शिक्षा और अनुसंधान को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

### श्रीरंग देवबा लाड : कपास उत्पादन में 300 प्रतिशत तक बढ़ोतरी

महाराष्ट्र के प्रगतिशील किसान और इनोवेटर श्रीरंग देवबा लाड को कपास खेती में नवाचारों के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उनकी विकसित 'दादा लाड कपास तकनीक' से बीज कपास की पैदावार में 300 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की गई। इस तकनीक से हजारों किसानों की आय में 40 प्रतिशत से अधिक का इजाफा हुआ है।

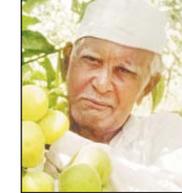
### श्री जोगेश देउरी : मूगा रेशम से संवारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था

असम के जोगेश देउरी को जमीनी स्तर पर कृषि और आजीविका सुधार के लिए पद्मश्री मिला है। उन्होंने विश्व-प्रसिद्ध मूगा रेशम के संरक्षण और संवर्धन में अहम योगदान दिया। पारंपरिक रेशम कीट पालन को आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़कर उन्होंने



हजारों परिवारों के लिए टिकाऊ आजीविका मॉडल तैयार किया।

### श्री रघुपत सिंह : खेती-बाड़ी के पंडित ( मरणोपरांत )



उत्तर प्रदेश के मुदाबाद जिले के किसान रघुपत सिंह को मरणोपरांत पद्मश्री से सम्मानित किया गया है। उन्होंने राजमा की 23 उन्नत किस्मों विकसित कीं और लगभग विलुप्त हो चुकी 55 से अधिक सब्जियों की किस्मों को फिर से जीवित किया। उनके शोध से करीब 100 नई पौध प्रजातियां सामने आईं, जिनमें 1.5 मीटर लंबी लौकी भी शामिल है।

### श्री राम रेड्डी मामिडी : सहकारी समितियों से बदली ग्रामीण आजीविका ( मरणोपरांत )

तेलंगाना के राम रेड्डी मामिडी को पशुपालन और दुग्ध उत्पादन से जुड़ी ग्रामीण आजीविका प्रणालियों को मजबूत करने के लिए मरणोपरांत पद्मश्री दिया गया है। उन्होंने सहकारी समितियों के जरिए किसानों को प्रशिक्षण दिया और महिला-नेतृत्व वाली संस्थाओं को सशक्त बनाने पर विशेष जोर दिया।



मुख्यमंत्री ने निवाई में किया ग्राम उत्थान शिविर का अवलोकन

## राजस्थान में किसानों का जीवन हो रहा खुशहाल : मुख्यमंत्री

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार ने राजस्थान को ऐसा प्रदेश बनाया है, जहां युवाओं को रोजगार के भरपूर अवसर, गरीबों का उत्थान और किसानों का जीवन खुशहाल हो रहा है। इसी कड़ी में ग्राम उत्थान शिविरों के माध्यम से आमजन को विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूक करते हुए पात्र व्यक्तियों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। ये शिविर प्रदेश के हर गिरदावर सर्किल पर लगाए जा रहे हैं, ताकि किसानों और ग्रामीणों को सभी सेवाएं नजदीक उपलब्ध हो सकें।

श्री शर्मा टोंक के निवाई में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्राम उत्थान शिविरों में किसानों, पशुपालकों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। अब तक पूरे प्रदेश में 941 ग्राम उत्थान शिविर लगाकर लाखों ग्रामीणों को लाभ पहुंचाया गया है। इनमें 50 हजार से अधिक स्वाइल हेल्थ कार्ड और 33 हजार स्वामित्व कार्ड का वितरण किया गया है। 2 लाख 60 हजार पशुओं की प्राथमिक चिकित्सा और 20 हजार पशुओं का टीकाकरण किया गया है। वहीं, पीएम सूर्य घर योजना के तहत 20 हजार पंजीकरण भी किए गए हैं।

वीबी जी राम जी से बदलेगी ग्रामीण भारत की तस्वीर- मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि जब गांव आगे बढ़ेगा,

तभी देश आगे बढ़ेगा। हाल ही में प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केन्द्र सरकार वीबी जी राम जी कानून लेकर आई है, जिसके अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में 125 दिन के रोजगार की गारंटी दी गई है। इसके माध्यम से ऐसे स्थायी विकास के कार्य होंगे जो गांवों में जल सुरक्षा, बुनियादी ढांचा और आजीविका संवर्धन में कारगर साबित होंगे। उन्होंने कहा कि योजना में तकनीक के माध्यम से कार्य पारदर्शी तरीके से होंगे। इससे हर श्रमिक को पैसा समय पर मिलेगा। यह कानून ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलेगा और विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने में सशक्त भूमिका निभाएगा।



वर्ष 2014 के बाद देश में हुए अभूतपूर्व बदलाव- श्री शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2014 के बाद देश में

अभूतपूर्व बदलाव आए हैं। प्रधानमंत्री देश के किसान, युवा, महिला और मजदूर चारों वर्गों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने देश में विकास

एवं गरीब कल्याण की योजनाओं से दुनिया में भारत का गौरव बढ़ाया है। महिलाओं के लिए 450 रुपये में गैस सिलेण्डर तथा किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि सहित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से राहत दी जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार राज्य के विकास के लिए रोडमैप बनाकर कार्य कर रही है। पानी की प्राथमिकता को समझते हुए हमने रामजल सेतु लिंक परियोजना, यमुना जल समझौता, गंगनहर की मरम्मत जैसे अनेक ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार वर्ष 2027 तक किसानों को दिन में बिजली देने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। इसी क्रम में राजस्थान के 22 जिलों में किसानों को दिन में बिजली की आपूर्ति की जा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसानों को 9 हजार रुपये दे रही है। पिछले दो साल में प्रदेश के किसानों को 11 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे खातों में भेजी गई है।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने टोंक को 370 करोड़ रुपये से अधिक राशि के 64 विकास कार्यों की सौगात दी। इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे और नागरिक सुविधाओं से जुड़े विभिन्न लोकार्पण और शिलान्यास शामिल हैं। साथ ही, उन्होंने मल्टी क्रॉप थ्रेसर अनुदान, किसान क्रेडिट कार्ड, गोपाल क्रेडिट कार्ड, मुख्यमंत्री कृषक साथी सहायता, शेडनेट हाउस तथा पॉली हाउस की सब्सिडी योजनाओं के लाभार्थियों एवं राजीविका दीदी समूहों को प्रतीकात्मक रूप से चैक वितरित किए और पीएम कुसुम योजनांतर्गत सोलर पम्प प्रमाण-पत्र भी सौंपे।

आर्थिक सर्वेक्षण पर प्रतिक्रिया

## वर्ष 2024-25 में 357 मिलियन टन से अधिक पहुंचा उत्पादन : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आर्थिक सर्वेक्षण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि सर्वेक्षण के आंकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि देश कृषि और ग्रामीण विकास- दोनों मोर्चों पर अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है।

कृषि क्षेत्र में निरंतर और स्थिर प्रगति- श्री चौहान ने कहा कि पिछले पाँच वर्षों के दौरान कृषि एवं सहायक क्षेत्रों में औसत वार्षिक विकास दर स्थिर मूल्यों पर 4.4 प्रतिशत रही है, जो वैश्विक औसत से अधिक है। वित्तीय वर्ष 2016 से 2025 के दौरान कृषि क्षेत्र की दशकीय वृद्धि दर 4.45 प्रतिशत रही है, जो पिछले दशकों की तुलना में सर्वाधिक है।

उन्होंने बताया कि वित्तीय वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में भी कृषि क्षेत्र ने 3.5 प्रतिशत की विकास दर दर्ज की है, जो इस क्षेत्र की मजबूती

और स्थिरता को दर्शाता है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में देश का खाद्यान्न उत्पादन 357.73 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है। यह वृद्धि मुख्य रूप से चावल, गेहूँ, मक्का और मोटे अनाज (श्री अन्न) की बेहतर पैदावार के कारण संभव हुई है।

बागवानी क्षेत्र बना कृषि विकास का उज्वल पक्ष- श्री चौहान ने कहा कि कृषि सकल मूल्य वर्धन (GVA) में लगभग 33 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ बागवानी क्षेत्र सबसे उज्वल पक्ष के रूप में उभरा है। बागवानी उत्पादन वित्तीय वर्ष 2013-14 में 280.70 मिलियन टन से बढ़कर 2024-25 में 367.72 मिलियन टन तक पहुंच गया है। इस दौरान फलों का उत्पादन 114.51 मिलियन टन, सब्जियों का 219.67 मिलियन टन तथा अन्य बागवानी फसलों का उत्पादन 33.54 मिलियन टन रहा।

## महाराष्ट्र में 2696 करोड़ की अरहर खरीदी को मंजूरी



केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में बैठक कर महाराष्ट्र में अरहर की 3.37 लाख मीट्रिक टन खरीद, जिसकी एमएसपी राशि लगभग 2696 करोड़ रुपए है, को मूल्य समर्थन योजना

(पी.एस.एस.) के तहत स्वीकृति दे दी है। बैठक के दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने राज्य के विपणन (मार्केटिंग) मंत्री श्री जयकुमार रावल के साथ खरीद से संबंधित व्यवस्थाओं पर चर्चा की। उन्होंने नेफेड, एनसीसीएफ और राज्य के संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि यह बहुत जरूरी है कि खरीद सही तरीके से हो। किसानों से सीधी खरीद से ही बिचौलियों की सक्रियता कम होगी और लाभ वास्तविक किसान तक पहुंच पाएगा।

श्यामपुरा कला में ग्राम उत्थान शिविर आयोजित

## मुख्य सचिव ने किसानों से संवाद कर योजनाओं के क्रियान्वयन का फीडबैक लिया

जयपुर। मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास ने दौसा जिले के लालसोट क्षेत्र में श्यामपुरा कला में आयोजित ग्राम उत्थान शिविर का अवलोकन कर विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को चेक एवं स्वीकृति पत्र वितरित किए। उन्होंने काश्तकारों के साथ संवाद कर सरकार की कृषक हितकारी योजनाओं से उन्हें मिल रहे लाभ के संबंध में फीडबैक लिया। इस दौरान मुख्य सचिव ने पालूदा में पॉली हाउस का अवलोकन कर वहां हो रही जरबेरा फूलों की खेती के बारे में जानकारी ली।

मुख्य सचिव ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देशानुसार किसानों को केन्द्रित करते हुए ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों के बाद जयपुर में वृहद स्तर पर ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) -2026 का आयोजन प्रस्तावित है, जहां खेती एवं पशुपालन की आधुनिकतम तकनीक से किसानों को रूबरू कराया जाएगा।

उन्होंने किसानों से संवाद करते हुए कहा कि इस क्षेत्र के पॉली हाउस की दिल्ली में केंद्रीय कृषि मंत्रालय तक चर्चा होती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य की विभिन्न कृषक कल्याण योजनाओं का लाभ लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान पीएम सूर्य घर योजना में सोलर प्लांट से बिजली बेचकर किसान बढ़िया आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने इस दौरान काश्तकारों से पॉली हाउस, मछली पालन, फार्म पौण्ड, तारबंदी एवं पीएम सूर्य घर सहित

विभिन्न योजनाओं से मिल रहे फायदों के बारे में जानकारी ली। काश्तकारों ने अवगत कराया कि उन्हें पॉली हाउस से अच्छी आमदनी प्राप्त हो रही है। एक पॉली हाउस से हर साल 10 से 20 लाख रुपए के बीच आय हो जाती है।

मुख्य सचिव वी श्रीनिवास, जिला कलक्टर देवेन्द्र कुमार एवं लालसोट विधायक रामबिलास



मीणा ने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को चेक एवं स्वीकृति पत्र सौंपे।

जिला कलक्टर देवेन्द्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्राम उत्थान शिविरों में किसानों को विभिन्न योजनाओं के प्रति जागरूक करने के साथ आवेदन तैयार करवाए जा रहे हैं, जिनकी स्वीकृतियां जारी की जाएगी। उन्होंने क्षेत्र में पॉली हाउस फार्मिंग के प्रति किसानों के बढ़ते रुझान को रेखांकित करते हुए बताया कि दौसा जिले में नवाचार करते हुए पॉली हाउस के लिए किसानों को सरकारी अनुदान के अलावा सहकारी बैंकों से रियायती ब्याज दर पर 10 लाख रुपए तक ऋण उपलब्ध करवाया जा रहा है। उन्होंने किसानों से समन्वित खेती का मॉडल अपनाकर अधिक आय प्राप्त करने का आग्रह किया।

## कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्दिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराडे

### अमृत जगत

आनंद वह वस्तु है जिसे मांगने पर पछताना नहीं पड़ता।  
- सुकरात

प्रकृति की हर मेहरबानी अपने साथ कुछ अवसर लाती है, तो कुछ कठोर संदेश भी छोड़ जाती है। हाल की मावटे की वर्षा ने जहाँ रबी फसलों के लिए नई उम्मीद जगाई है, वहीं कुछ राज्यों मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों में हुई ओलावृष्टि ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि मौसम का असंतुलन कितनी तेजी से लाभ को नुकसान में बदल सकता है। कृषि, जो हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, सबसे पहले और सबसे अधिक इसी अनिश्चितता का सामना करती है।

मावटे की बारिश विशेष रूप से असिंचित क्षेत्रों के लिए वरदान साबित हो सकती है। प्रदेश में खेती का बड़ा हिस्सा वर्षा आधारित है और इस समय मिली नमी यदि सही ढंग से उपयोग में लाई जाए तो गेहूँ, चना, मसूर और अन्य रबी फसलों की पैदावार में सुधार संभव है। लेकिन ओलावृष्टि से प्रभावित क्षेत्रों ने यह भी याद दिलाया है कि केवल उत्पादन बढ़ाने की उम्मीद करना पर्याप्त नहीं, बल्कि जोखिम प्रबंधन भी उतना ही जरूरी है।

## मावठा और ओलावृष्टि : अवसर, चेतावनी और किसान की सजगता

देश के कुछ हिस्सों में ओलावृष्टि ने खड़ी फसलों को नुकसान पहुँचाया है। गेहूँ की बालियों, चने और अरहर की फलियों पर सीधा प्रभाव पड़ा है। यह स्थिति बताती है कि बदलते मौसम में चरम घटनाएँ— जैसे ओला, पाला या असमय वर्षा—अब अपवाद नहीं रही। ऐसे में फसल बीमा, समय पर



सर्वे और त्वरित राहत व्यवस्था पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

वर्षा के बाद मौसम के साफ होते ही पाले की आशंका भी बढ़ जाती है। विशेषकर अरहर की फसल, जो फूल अवस्था में होती है, पाले से सबसे अधिक प्रभावित हो सकती है। वहीं आलू

की फसल में नमी और टंडक का यह संयोग पिछेती झुलसा रोग को बढ़ावा दे सकता है, जिससे समय पर फफूंदनाशी छिड़काव की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

गेहूँ की फसल के लिए गेरुआ रोग की चुनौती भी कम गंभीर नहीं है। मावटे के जल और हवा के साथ पर्वतीय क्षेत्रों से आने वाली फफूंदियाँ अभी भले ही शांत हो, लेकिन तापमान अनुकूल होते ही उनका प्रसार तेजी से हो सकता है। मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भूरे और काले गेरुए का खतरा विशेष सतर्कता की माँग करता है।

खेती आज केवल मेहनत का विषय नहीं रही, बल्कि समझ और तैयारी का भी प्रश्न बन चुकी है। किसान को अब मौसम की हर करवट पर नजर रखनी होगी और वैज्ञानिक सलाह को अपनाना होगा। ओलावृष्टि से मिले घाव यह सिखाते हैं कि प्रकृति की कृपा के साथ उसकी कठोरता के लिए भी तैयार रहना जरूरी है।

अंततः मावठा हो या ओलावृष्टि—दोनों प्रकृति के संकेत हैं। यदि इन संकेतों को समय रहते समझा जाए, तो नुकसान को सीमित कर लाभ की संभावनाएँ बढ़ाई जा सकती हैं। जागरूक किसान, सक्रिय प्रशासन और समय पर निर्णय ही खेती को इन अनिश्चितताओं के बीच टिकाऊ और लाभकारी बना सकते हैं।

## नीलगाय और जंगली सुअर : खेती और नीति की समस्या

### • अरविंद सरदाना

नीलगाय और जंगली सुअर से फसलों को बड़े पैमाने पर हो रहे नुकसान से किसान परेशान हैं और खेती- किसानों को जानने- समझने वाले लगभग सभी लोग इस समस्या से वाकिफ हैं। इस समस्या के निदान में कई भ्रांतियाँ बाधक बनी हैं। मसलन- यह भ्रम बना हुआ है कि इन जानवरों का आवास जंगल में है जो कि सही नहीं है। एक अध्ययन के अनुसार 85 प्रतिशत नीलगायों का आवास राजस्व क्षेत्र में है।

गाँव के आसपास की चरनोई ज़मीन और वहाँ की झाड़ियों के बीच इनका डेरा रहता है। वहाँ से वे अपना पेट भरने के लिए खेतों में आ जाती हैं और फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं। नीलगायों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। एक रपट के अनुसार मध्यप्रदेश के अकेले शाजापुर जिले में नीलगायों की संख्या लगभग 2000 और कुछ अन्य जिलों में 6000 है। मध्यप्रदेश के ऐसे 21 जिले हैं, जिन्हें वन विभाग ने समस्याग्रस्त बताया है। इन जिलों के राजस्व क्षेत्र में नीलगायों की संख्या हजारों में होने की सम्भावना है।

एक अनुमान के अनुसार भारत में करीब एक लाख नीलगायें हैं और इनका बड़ा हिस्सा मध्यप्रदेश में है जहाँ पुराना अनुमान 33,500 का बताया जाता है। जंगल को बचाने के लिए इन्हें 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972' में जोड़ा गया था, किन्तु जब नीलगाय की मौजूगी राजस्व क्षेत्र में होने की बात सामने आई तो यह स्वतः ही 'वन्यजीव संरक्षण कानून' की परिधि से बाहर हो गई। एक नीलगाय को प्रतिदिन 18 से 30 किलो हरा चारा चाहिए जो चरनोई की घास एवं खेती को नष्ट करके ही प्राप्त हो सकता है। एक जिले में जहाँ

6000 नीलगाय हैं, वहाँ इनसे लगभग 4000 हेक्टेयर कृषि भूमि प्रभावित होती है।

इस तथ्य का पहला निष्कर्ष यह निकलता है कि वन विभाग को मध्यप्रदेश के 21 जिलों और



34 चिन्हित ब्लाकों, जो उनकी रपट के अनुसार सबसे प्रभावित इलाके हैं, में सघन सर्वे करके नीलगाय और जंगली सुअर की गणना की जाए। इसमें ग्राम पंचायत और किसानों का पूरा सहयोग लिया जाए। सर्वे के माध्यम से नीलगायों के डेरों को मानचित्र पर उतारा जाना चाहिए और उनका प्रभाव क्षेत्र एवं संख्या नोट की जानी चाहिए।

समस्या के निदान का एक तरीका हो सकता है कि नीलगायों को राजस्व क्षेत्र से पकड़कर जंगल में छोड़ा जाए। कई कारणों से यह कारगर नहीं है। हाल में शाजापुर

जिले में स्थानांतरण का एक प्रयोग किया गया था। यह साउथ अफ्रीका की 'बोमा तकनीक' है। एक बागड़ बनाकर रास्ता निकाला जाता है जहाँ से हिरण एवं नीलगाय को हेलीकाप्टर की मदद से जंगल की ओर भगाया जाता है। इस तरह से केवल 67 नीलगायों को हकाला जा सका, जबकि उनकी संख्या हजारों में है। यदि स्थानांतरण संभव भी हो, तब भी तर्क संगत नहीं है, क्योंकि वर्तमान में वन्यजीवों की बड़ी संख्या के पोषण की आपूर्ति जंगल नहीं कर सकता। जंगल के संसाधनों को

देखते हुए एक सीमित मात्रा में स्थानांतरण किया जा सकता है। कई लोगों का कहना है कि जंगल में चरनोई एवं पानी की व्यवस्था बढ़ाई जाए, ताकि इस प्रकार के वन्यजीवों के लिए पर्याप्त पोषण हो सके।

नीलगाय एवं जंगली सुअर की विशाल संख्या, जिन्होंने गौचर भूमि पर दशकों से डेरा बना लिया है, को कम करने का एक ही तरीका हो सकता है। 'वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972' में प्रावधान है कि चिन्हित इलाकों में नीलगाय एवं जंगली सुअर को 'वर्मिन' यानी नुकसानदायक जानवर घोषित किया जाए। यह एक

निश्चित समय के लिए लागू होता है। ऐसा करने पर वन विभाग, अपने नियंत्रण में उनकी संख्या को कम करने की योजना बना सकता है। वह शिकारियों की टीम गठित कर सकता है और एक योजना के तहत इसे अंजाम दे सकता है।

इसी प्रकार की योजना बिहार में लागू की गई थी और सफल रही। वर्ष 2015 में कानूनी अनुमति के बाद नीलगाय और जंगली सुअर को 'वर्मिन' घोषित किया गया। यह बिहार के 31 जिलों में लागू किया गया था। एक अनुमान है कि लगभग दस हजार नील गायों को मारा गया। इस प्रक्रिया में पंचायतों की लिखित शिकायत पर जांच करके वन विभाग ज़रूरत पड़ने पर शिकारियों की व्यवस्था करता है। वर्ष 2016 में उत्तराखंड सरकार ने जंगली सुअरों को मारने की अनुमति ली। इस प्रकार की अनुमति 'मुख्य वन्यप्राणी वार्डन' द्वारा विशेष परिस्थितियों में दी जाती है और कई राज्यों ने इसका उपयोग किया है।

इस समय मध्यप्रदेश के लिए एक विशेष अभियान की ज़रूरत है क्योंकि यह वन्यजीव जंगल के बाहर बड़ी संख्या में बसे हुए हैं। मुआवजा देकर या बागड़ बनाकर इसका हल निकालना समस्या को टालने वाला कदम होगा। अभी तक मुआवजे का रिकॉर्ड नगण्य रहा है और नीलगाय आसानी से बागड़ लांघ जाते हैं। पानी सर के ऊपर हो जाने से पहले कदम उठाना समझदारी होगी।

इसकी रोकथाम से खेती पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। आज किसानों ने कई फसलें लगाना छोड़ दिया है जिन्हें नीलगाय या जंगली सुअर के झुण्ड रातों-रात नष्ट कर देते हैं, जैसे-चना, मक्का, तुअर, मूंगफली, सब्जियाँ आदि। हम मिश्रित खेती की ओर जाना चाहते हैं, इसलिए भी इस समस्या का निदान ज़रूरी है। आवश्यक है कि नीलगाय एवं जंगली सुअर की समस्या को केवल संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि 'मानव - वन्यजीव प्रबंधन' के रूप में देखा जाए। 'वर्मिन' घोषित करने जैसे निर्णयों के साथ प्रशिक्षित शिकारी और वन विभाग की सीधी जवाबदेही तय करना आवश्यक है। (संप्रेस)

# फसल में सल्फर का महत्व

## ● अनामिका तोमर

सल्फर, जो कि मृदा पोषण में चौथा आवश्यक तत्व है, जिस पर किसान प्रायः ध्यान नहीं देते हैं, तिलहनी फसलें भारतीय आहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसका उत्पादन लगभग 24 मिलियन टन हो रहा है। तिलहन फसल के लिए संतुलित उर्वरक का प्रयोग आवश्यक है, जिसमें नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, गंधक, जिंक व बोरान तत्व अति

आवश्यक है। गत वर्षों में संतुलित उर्वरकों के अंतर्गत केवल नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश के

उपयोग पर बल दिया गया। सल्फर के उपयोग पर विशेष ध्यान न दिये जाने के कारण मृदा के नमूनों में 40 प्रतिशत गंधक (सल्फर) की कमी पाई गई। आज उपयोग में आ रहे गंधक रहित उर्वरकों जैसे यूरिया, डीएपी, एनपीके तथा म्युरेट ऑफ पोटाश के उपयोग से गंधक की कमी निरंतर बढ़ रही है।

गंधक की कमी मुख्यतः निम्न कारणों से भूमि के अंदर हो जाती है, जिसकी तरफ कृषकों का ध्यान नहीं जाता-

- भूमि में संतुलित उर्वरकों का प्रयोग न करना।
- लगातार विभिन्न फसलों द्वारा गंधक जमीन में लेते रहने व सल्फर रहित उर्वरकों के प्रयोग में

इन तत्वों की कमी हो जाती है।

- ऐसे उर्वरकों का उपयोग जिसमें बहुत कम या न के बराबर सल्फर का होना।



**फसल की अच्छी उपज के लिए हम उर्वरक का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि बिना उर्वरक के फसल की अच्छी उपज होना मुश्किल है। ऐसे में खेती के लिए सबसे बड़ी जरूरत सही उर्वरक का चयन है। खेती के लिए किस प्रकार की उर्वरक लाभदायी होगी उसकी कैसे पहचान करें ये जानना बहुत जरूरी है।**

- जहाँ अकार्बनिक खादें प्रयोग में नहीं आती हैं, वहाँ पर भी सल्फर की कमी का होना।
- हाल ही में तोड़ कर विकसित की गई भूमि या हल्क

गठन वाली बलुई मिट्टी में, जहाँ निक्षालन द्वारा पोषक तत्वों की हानि हो जाया करती है, सल्फर की कमी पाई जा सकती है।

### सल्फर की कमी के लक्षण

- सल्फर की कमी से पौधों का रंग पीला हो जाता है और इस कमी की शुरुआत पौधों के ऊपरी हिस्से या नये पत्ते से होती है।
- सल्फर की कमी से पौधों का विकास रुक जाता है।
- पौधों का हरापन कम हो जाता है।
- खाद्यान्न फसलें अपेक्षाकृत देर से पकती हैं एवं बीज ढंग से परिपक्व नहीं हो पाते हैं।
- पत्तियां व तने में बैंगनीपन आ जाता है।

- गंधक के अभाव में पौधे पीले, हरे, पतले और आकार में छोटे हो जाते हैं तथा पौधे का तना पतला और कड़ा हो जाता है।
- सल्फर की कमी से आलू की पत्तियों का रंग पीला, तने कठोर तथा जड़ों का विकास कम रहता है। सल्फर की कमी से फसल में फूल नहीं आते और न ही फल बनते हैं।

### गंधक के कार्य

- गंधक क्लोरोफिल का अवयव नहीं है फिर भी यह इसके निर्माण में सहायता करता है तथा पौधे के हरे भाग की अच्छी वृद्धि करता है।
- यह गंधक युक्त एमिनो अम्लों, सिस्टाइन,

सिस्टीन तथा मिथियोनीन तथा प्रोटीन संश्लेषण में आवश्यक होता है।

- सरसों के पौधों की विशिष्ट गंध निर्माण को यह प्रभावित करती है। तिलहनी फसलों के पोषण में गंधक का विशेष महत्व है क्योंकि बीजों में तेल बनने की प्रक्रिया में इस तत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- सरसों के तेल में गंधक के यौगिक पाये जाते हैं। तिलहनी फसलों में तैलीय पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करती है।
- इसके प्रयोग से बीज बनने की क्रियाओं में तेजी आती है।

### गंधक की कमी को दूर करना

गंधक की कमी गंधक युक्त निम्नलिखित उर्वरकों के प्रयोग से दूर की जा सकती है।

उर्वरक	उपलब्ध गंधक (प्रतिशत)	प्रयोग विधि
सिंगल सुपर फास्फेट	12	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में
पोटेशियम सल्फेट	18	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में
अमोनियम सल्फेट	24	बुवाई के पूर्व बेसल ड्रेसिंग के रूप में एवं खड़ी फसल में टाप ड्रेसिंग के रूप में।
जिप्सम (शुद्ध)	18	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा में बुवाई में 3-4 सप्ताह पूर्व प्रयोग करें। यह ऊसर भूमि के लिए ज्यादा उपयुक्त है
पाइराइट	22	भूमि की सतह पर उचित नमी की दशा में बुवाई में 3-4 सप्ताह पूर्व प्रयोग करें। यह ऊसर भूमि के लिए ज्यादा उपयुक्त है
जिंक सल्फेट	18	जस्ते की कमी वाली भूमि के लिए उपयुक्त है। इसका प्रयोग बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व या खड़ी फसल में पर्णाय छिड़काव करें।
तात्विक गंधक	95-100	जिस भूमि में वायु का संचार अच्छा हो तथा चिकनी मिट्टी ( भारी भूमि) के लिए विशेष उपयुक्त है। बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व उचित नमी की दशा में प्रयोग करें।

इन उर्वरकों में गंधक, सल्फेट के रूप में पाया जाता है, जिसका उपयोग पौधे सुगमता पूर्वक कर लेते हैं।

## ● मधुकर पवार, मो.: 8770218785

आर्थिक समीक्षा में कृषि क्षेत्र के आंकड़े उत्साहजनक हैं। पिछले पांच वर्षों में कृषि एवं सहयोगी क्षेत्रों की औसत वार्षिक विकास दर 4.4 प्रतिशत रही है। वित्त वर्ष 2025-26 की दूसरी तिमाही में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत दर्ज की गई। दशकीय (2016-25) औसत वृद्धि दर 4.45 प्रतिशत रही, जो पिछले दशकों में सबसे अधिक है। यह वृद्धि मुख्य रूप से पशुधन (7.1 प्रतिशत) और मत्स्य पालन (8.8 प्रतिशत) जैसे सहयोगी क्षेत्रों के मजबूत प्रदर्शन से संभव हुई है।

देश में खाद्यान्न उत्पादन भी लगातार बढ़ा है। वर्ष 2024-25 में खाद्यान्न उत्पादन 3,577.3 लाख मीट्रिक टन तक पहुंचने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष से 254.3 लाख मीट्रिक टन अधिक है। चावल, गेहूँ, मक्का और मोटे अनाजों की बेहतर उपज इसका मुख्य कारण रहा है। बागवानी क्षेत्र, जो कृषि सकल मूल्य वर्धन में 33 प्रतिशत योगदान देता है, 2024-25 में 362 मिलियन टन से अधिक उत्पादन के साथ खाद्यान्न उत्पादन से आगे निकल गया। भारत आज विश्व का सबसे बड़ा प्याज उत्पादक और फल-सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन चुका है।

उत्पादकता बढ़ाने के लिए सरकार ने बीज, सिंचाई, मृदा स्वास्थ्य, यंत्रिकरण और विपणन अवसंरचना पर विशेष ध्यान दिया है। 6.85 लाख बीज ग्राम, 25.55 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड, 25,689 कस्टम हायरिंग सेंटर, ई-नाम पर 1.79 करोड़ किसानों का पंजीकरण और 10 हजार एफपीओ का गठन-ये सभी तथ्य बताते हैं कि कृषि को एक संगठित और बाजारोन्मुख क्षेत्र बनाने की कोशिश जारी है।

# आर्थिक समीक्षा में कृषि की उजली तस्वीर!



### केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा गत 29 जनवरी को संसद में प्रस्तुत की गई आर्थिक समीक्षा 2025-26 से यह स्पष्ट हुआ है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती में कृषि और ग्रामीण भारत की भूमिका बरकरार है। आर्थिक समीक्षा में कृषि उत्पादन और सहयोगी क्षेत्रों की प्रगति को दर्शाते हुए बताया गया है कि बीते वर्षों में बुनियादी ढांचे, तकनीक और नीति सुधारों ने गांवों की तस्वीर को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मूल्य और आय समर्थन के तहत एमएसपी, पीएम-किसान और कृषि ऋण योजनाओं ने किसानों को स्थिरता दी है। पीएम-किसान के तहत अब तक 4.09 लाख करोड़ रुपये सीधे किसानों के खातों में पहुंचाए गए हैं, जबकि वित्त वर्ष 2025 में कृषि ऋण वितरण 28.69 लाख करोड़ रुपये रहा।

पशुधन क्षेत्र ने 2015 से 2024 के बीच उल्लेखनीय प्रगति की है। इसके सकल मूल्य वर्धन में लगभग 195 प्रतिशत की वृद्धि हुई और 12.77 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर दर्ज की गई। मत्स्य पालन क्षेत्र में 2014-25 के दौरान मछली उत्पादन में 140 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई।

आर्थिक समीक्षा का पहला मजबूत पक्ष ग्रामीण आधारभूत ढांचे का विस्तार



है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) के तहत 25 दिसंबर 2000 को शुरू की गई पहल ने ग्रामीण संपर्क में क्रांतिकारी बदलाव किया है। 15 जनवरी 2026 तक 99.6 प्रतिशत पात्र बसावटों को ऑल-वेदर सड़क सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है।

ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता सुधारने में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की भूमिका भी अहम रही है। योजना के तहत 2029 तक 4.95 करोड़ पक्के मकान उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है।

जल जीवन मिशन ने 'हर घर जल' के लक्ष्य को वास्तविकता के करीब पहुंचाया है। अगस्त 2019 में योजना की शुरुआत के समय केवल 17 प्रतिशत ग्रामीण घरों में नल से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध था। 20 नवंबर

2025 तक यह आंकड़ा बढ़कर 81.30 प्रतिशत यानी 15.74 करोड़ ग्रामीण घरों तक पहुंच गया।

आर्थिक समीक्षा 2025-26 कृषि और ग्रामीण भारत की एक तथ्यपरक और आशावादी तस्वीर पेश करती है। लेकिन धरातल पर तस्वीर कुछ और ही है। किसानों को न तो समय पर खाद मिलती है और न ही पर्याप्त बिजली। नकली खाद और बीज से भी किसानों की उम्मीदों पर तुषारापात हो जाता है। सबसे ज्यादा तकलीफ तो तब होती है जब किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य अपनी उपज को बेचने के लिए तरस जाते हैं जबकि सरकार भी जानती है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं मिलने पर किसानों की लागत की भी भरपाई नहीं हो पाती है। अब उम्मीद यह है कि इन उपलब्धियों के साथ किसानों की ज्वलंत समस्याओं जैसे खाद और बिजली की समय पर उपलब्धता, न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कृषि उपज की बिक्री, लागत कम करने के उपाय, फसल बीमा के तहत मुआवजा का सही आकलन और शीघ्र भुगतान तथा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत सहायता राशि को बढ़ाने पर गम्भीरता से विचार कर कार्यावयन करना चाहिए। सरकार द्वारा किए जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त संसाधन, जलवायु-संवेदनशील नीतियाँ और बाजार सुधारों को प्राथमिकता देना होगा। यदि ऐसा होता है, तो कृषि न केवल 'विकसित भारत' के लक्ष्य की धुरी बनेगी, बल्कि करोड़ों ग्रामीण परिवारों के जीवन में स्थायी सुधार का आधार सिद्ध होगी।



# संतरे की उन्नत खेती

भारत में केले के पश्चात नींबू प्रजाति के फलों का तीसरा स्थान है इसमें सर्दी तथा गर्मी सहन करने की क्षमता होने के कारण नींबू प्रजाति का कोई ना कोई फल लगभग सभी प्रांतों में उगाया जाता है। इन नींबू वर्गीय फलों में संतरा भी एक महत्वपूर्ण फल है। संतरे को वानस्पतिक रूप से सिट्रस रिटीकुलेटा के नाम से जाना जाता है। भारत में नींबू प्रजाति के फलों में संतरे का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है इसे मेंडेरीन भी कहते हैं। संतरा अपनी सुगंध और स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, इसके साथ-साथ इसमें विटामिन 'ए' और 'बी' भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं। देश के अंदर संतरे का कुल क्षेत्रफल 4.28 लाख हेक्टेयर है जिससे 51.01 लाख टन उत्पादन होता है।

- दुर्गाशंकर मीणा, तकनीकी सहायक,
- डॉ. मूलाराम, सहायक आचार्य
- जयराज सिंह गौड़
- मुकुट बिहारी, कृषि पर्यवेक्षक  
कृषि अनुसंधान केंद्र, मण्डौर  
(कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर)  
Email:-dstameena1997@gmail.com

## भूमि

संतरे की खेती लगभग सभी प्रकार की अच्छे जल निकास वाली जीवांश युक्त भूमि में की जा सकती है, परंतु गहरी दोमट मिट्टी इसके लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। भूमि की गहराई 2 मीटर हो। मृदा का पीएच 4.5 से 7.5 उचित रहता है। इसकी सफलतम खेती के लिए अवमृदा कंकरीली पथरीली व कठोर नहीं होनी चाहिए।

## उन्नत किस्में

भारत में उगाई जाने वाली किस्मों में नागपुरी संतरा, खासी संतरा, कूर्म संतरा, पंजाब देसी, दार्जिलिंग संतरा व लाहौर लोकल

## खाद एवं उर्वरक

संतरे के पौधों से उत्तम गुणवत्ता वाले अधिक फल प्राप्त करने के लिये खाद व उर्वरकों का उचित प्रबंधन करें। संतरे के पौधों में निम्न सारणी अनुसार खाद व उर्वरक देने की अनुशंसा की जाती है।

पौधे की आयु	गोबर खाद (कि.ग्रा.)	यूरिया (ग्राम)	एसएसपी (ग्राम)	एमओपी (ग्राम)
एक वर्ष	15	125	250	-
दो वर्ष	30	250	500	-
तीन वर्ष	45	375	750	200
चार वर्ष	60	500	600	200
पाँच वर्ष	75	625	1250	400

आदि प्रमुख हैं। भारतीय संतरा में नागपुर संतरा सर्वोपरि हैं एवं विश्व के सर्वोत्तम संतरा में इसका स्थान प्रमुख हैं। किंग तथा विलोलीफ के संकरण से तैयार किस्मों की किस्म पंजाब और राजस्थान में व्यवसायिक महत्व की किस्म है।

## प्रवर्धन

संतरे का वानस्पतिक प्रवर्धन कलिकायन विधि द्वारा किया जाता है। कलिकायन के लिये मूलवृत्त के रूप में जट्टी खट्टी, जम्भरी, रंगपुर लाइम, किलओप्टरा मेन्डेरीन, ट्रायर सिट्रेन्ज तथा करना खट्टा काम में लेते हैं। मूलवृत्त फरवरी माह में तैयार किये जाते हैं। लगभग एक वर्ष आयु का मूलवृत्त कलिकायन के लिये उपयुक्त रहता है। साधारणतः शील्ड एवं पैच कलिकायन फरवरी से मार्च व सितम्बर - अक्टूबर में किया जाये।

## पौधा रोपण

कलिकायन किये गये पौधे दूसरे वर्ष जब लगभग 60 सेमी. के हो जाये तो पौधारोपण हेतु उपयुक्त माने जाते हैं। संतरे के पौधे लगाने के लिए 90 घन सेमी. आकार के गड्ढे मई-जून में 6x6 मीटर की दूरी पर खोदे जाते हैं। उत्तरी भारत में पौधे लगाने का उचित समय जुलाई-अगस्त है। पौधा लगाने से पूर्व प्रत्येक गड्ढे को 20 किलोग्राम गोबर की खाद, 1 किलोग्राम सुपर फास्फेट व मिट्टी के मिश्रण से भरें। दीमक के नियंत्रण के लिए मिथाइल पेरिथ्रियान 50-100 ग्राम प्रति गड्ढा दें।

गोबर की खाद, सुपर फास्फेट, म्यूरैट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा दिसम्बर-जनवरी में

दें। यूरिया की 1/3 मात्रा फरवरी में फूल आने के पहले तथा शेष 1/3 मात्रा अप्रैल में फल बनने के बाद और शेष मात्रा अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में दें। संतरा में फरवरी व जुलाई माह में गौण तत्वों का छिड़काव करना उचित रहता है। इसके लिये 550 ग्राम जिंक सल्फेट, 300 ग्राम कॉपर सल्फेट, 250 ग्राम मैंगनीज सल्फेट, 200 ग्राम मैग्नेशियम सल्फेट, 100 ग्राम बोरिक एसिड, 200 ग्राम फेरस सल्फेट व 900 ग्राम चूना लेकर 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

## सिंचाई

सर्दी में दो सप्ताह व गर्मी में एक सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। फल लगते समय पानी की कमी से फल झड़ने लगते हैं। फल पकने के समय पानी की कमी से फल सिकुड़ जाते हैं व रस की प्रतिशत मात्रा घट जाती है। अतः जब सन्तरे का उद्यान फलन में हो तब आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। खाद देने के बाद सिंचाई करना परम आवश्यक है। कटाई-छंटाई संतरे का सुन्दर ढांचा बनाने के लिए प्रारम्भिक वर्षों में कटाई-छंटाई की जाती है। फल देने वाले पौधों को कटाई-छंटाई की कम

आवश्यकता होती है, परन्तु सूखी व रोगग्रस्त टहनियों को काटते रहें।

## उपज एवं भण्डारण

कलिकायन द्वारा तैयार किये गये पौधे 3-5 वर्ष की आयु में फल देते हैं। प्रायः पुष्पन के 8 से 9 माह बाद फल पक कर तैयार हो जाते हैं। संतरे के फलों का रंग हल्का पीला हो जाये तब इन्हें तोड़ लें। 600 से 800 फल तथा औसतन 70 से 80 किग्रा. प्रति पौधा प्राप्त होती है। संतरा के फलों को 5-6 डिग्री सेल्सियस तापक्रम व 85-90 प्रतिशत आपेक्षिक आर्द्रता पर 4 महीने तक भण्डारित किया जा सकता है।

## फलों का गिरना

सामान्यतः माल्टा में तुड़ाई के लगभग पांच सप्ताह पहले से फल गिरने लगते हैं, इसकी रोकथाम हेतु 2, 4-डी (10 पीपीएम) या एनएए 150 पीपीएम) का छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त फलन के समय भूमि में समुचित नमी बनाये रखें।

यदि फलन के समय किसी कवक जनित रोग का प्रकोप हो तो उसके नियंत्रण का उचित उपाय करना लाभकारी रहता है।

## कीट

नींबू की तितली- तितली की लटें पत्तियों



को खाकर नुकसान पहुंचाती है। इससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है। इसके नियंत्रण के लिये लटों को पौधों से पकड़ कर मिट्टी के तेल में डालें। फिनालफास 25 ई.सी. का 1.5 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

**फल चूसक** - कीट फलों से रस चूस कर नुकसान करता है। प्रभावित फल पीला पड़कर सूख जाता है और गुणवत्ता भी कम हो जाती है। इस कीट के नियंत्रण के लिये मैलाथियॉन 50 ई.सी. 1 मिली./लीटर पानी का घोल का छिड़काव करें। कीट को आकर्षित करने के लिये प्रलोभक का भी उपयोग करना चाहिए। प्रलोभक में 100 ग्राम शक्कर के 1 लीटर घोल में 10 मिली. मेलाथियॉन मिलाया जाता है।

**लीफ माइनर** - यह कीट वर्षा ऋतु में नुकसान पहुंचाता है। यह पत्तियों की निचली सतह को क्षतिग्रस्त कर पत्तियों में सुरंग बनाता है। इस कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. या फिनालफास 25 ई.सी. का 1.5 मिली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।

**मूलग्रन्थी (सूत्रकृमि)** - यह नींबू प्रजाति के फलों की जड़ों को नुकसान पहुंचाता है। इसके प्रकोप से फल छोटे व कम लगते हैं। नुकसान पहुंचाता है जिससे पत्तियाँ पीली पड़ कर टहनियाँ सूखने लगती इसके नियंत्रण के लिये कार्बोफ्यूरोन 3 जी. 20 ग्राम/पौधा देना चाहिए।

## व्याधियाँ

नींबू का केंकर - यह रोग जेन्थोमोनास



सिट्राई नामक जीवाणु द्वारा होता है। रोग से प्रभावित पत्तियों, फलों व टहनियों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। फलों पर पीले, खुरदरे धब्बे बन जाने से गुणवत्ता प्रभावित होती है। कागजी नींबू इससे ज्यादा प्रभावित होते हैं। केंकर की रोकथाम के लिये 20 ग्राम एगोमाइसीन अथवा 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। नये रोग रहित पौधों का चुनाव करें तथा पौधों पर रोपण से पूर्व 4:4:50 बोर्डो मिश्रण छिड़कें।

**गमोसिस** - यह तना सड़न रोग है जिसमें तने से भूमि के पास व टहनियों के ग्रसित भाग से गोंद जैसा पदार्थ निकलता है। इस गोंद से छाल प्रभावित होकर नष्ट हो जाती है। रोग के अधिक प्रकोप से पौधा नष्ट हो जाता है। रोग के नियंत्रण के लिये छाल से गोंद हटाकर ब्लाइटॉक्स-50 0.3 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए। इस दवा का छिड़काव पौधों पर भी किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त बाग का उचित प्रबंधन भी रोग से बचाव करता है।

**सूखा रोग (डाई बैक)** - इस रोग में टहनियाँ ऊपर से नीचे की तरफ सूख कर भूरी हो जाती है। पत्तियों पर भूरे बेंगनी धब्बे बनने से सूख कर गिर जाती है। इससे उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा पौधा नष्ट हो जाता है। नियंत्रण के लिये रोगी भाग को काट कर अलग करें एवं मेन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर पानी का घोल का छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त फरवरी व अप्रैल माह में सूक्ष्म तत्वों का पौधों पर छिड़कें।



- चोवतिया रविकुमार मनसुखभाई
  - परमार बिंदिया कीर्तिकुमार
  - शोध छात्र, मात्स्यिकी महाविद्यालय, केरल मात्स्यिकी और महासागर अध्ययन विश्वविद्यालय, केरल
  - भावेश चौधरी
  - शोध छात्र, मात्स्यिकी महाविद्यालय, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (इम्फाल), लेबुचेर, त्रिपुरा
- bhaveschoudhary@yahoo.com

विशेष रूप से, जीवाणु रोगों ने पिछले दशकों के दौरान झींगा जलीय कृषि उद्योग में सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय अस्थिरता लाई है। विब्रियोसिस, एक महत्वपूर्ण जीवाणु रोग, अवसरवादी विब्रियो एसपीपी के कारण होता है। क्षेत्र में झींगा किसानों के लिए सबसे गंभीर खतरे के रूप में जारी है। जलीय कृषि में सबसे महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक जलीय जानवरों के स्वास्थ्य और उत्पादन को खतरे में डालने वाली विभिन्न बीमारियों की घटना है। समुद्री जानवर सचमुच संभावित रोगजनकों में तैरते हैं जो उन्हें वायरस, बैक्टीरिया, कवक और यहां तक कि प्रोटोजोआ के प्रति अतिसंवेदनशील बनाते हैं। वी. हार्वेई, वी. एलिनोलेटिकस, वी. एंगिलेरम, वी. स्लेन्डिस, वी. सैल्मोनिसिडा, वी. वल्लिफिकस और वी. पैराहेमोलिटिकस उपभेद वाइब्रियोसिस के मुख्य कारक जीवों के रूप में पाए गए हैं। कुछ विब्रियो स्पीशीज तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग (ए.एच.पी.एन.डी.) के लिए भी जिम्मेदार हैं जिसे मूल रूप से प्रारंभिक मृत्यु सिंड्रोम के रूप में जाना जाता है।

झींगा जलीय कृषि में एचपीएनडी 2013 के अंत से बढ़ गया है, जब दक्षिण-एशियाई देशों में उद्योग ध्वस्त हो गया था। एचपीएनडी, झींगा जलीय कृषि उद्योग पर विनाशकारी प्रभाव डालता है, तेजी से विकसित होता है, लगभग 8 दिनों के बाद स्टॉकिंग और गंभीर मृत्यु दर (100 प्रतिशत तक) 20-30 दिनों के भीतर होता है।

**तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग** (ए.एच.पी.एन.डी.) एक अपेक्षाकृत नई खेती की जाने वाली पेनेइड झींगा जीवाणु रोग है जिसे मूल रूप से प्रारंभिक मृत्यु दर सिंड्रोम (ई.एम.एस.) के रूप में जाना जाता है जो झींगा उद्योग में तबाही मचा रहा है। ए.एच.पी.एन.डी. का प्रकोप पहली बार 2009 में चीन में दिखाई देने के बाद से यह वियतनाम (2010) मलेशिया (2011) थाईलैंड (2012) मैक्सिको (2013) फिलीपींस (2015) और दक्षिण अमेरिका में फैल गया है। (2016) एचपीएनडी झींगा की कई प्रजातियों को प्रभावित करता है जिनमें वाणिज्यिक प्रजातियां, पी. मोनोडन, एल. वानामेई और एम. रोसेनबर्गी और क्रस्टेशियन मॉडल आर्टेमिया फ्रांसिस्काना शामिल हैं। इसके अलावा, झींगा के प्रारंभिक जीवन चरण, सामान्य रूप से, ए.एच.पी.एन.डी. संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील

## झींगा पालन में तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग

वैश्विक अर्थव्यवस्था में जलीय कृषि उद्योग की एक बड़ी भूमिका है। यह व्यावसायिक क्षेत्रों को रोजगार के अवसर और राजस्व प्रदान करता है। इसकी मांग वर्षों से बढ़ती जा रही है और यह मानव उपभोग पर बहुत अधिक निर्भर है। जलीय कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में, क्रस्टेशियन उद्योग ने पिछले वर्षों में दुनिया भर में क्रस्टेशियन की बढ़ती बाजार मांग के कारण तेजी से विकास किया है। झींगा और झींगा उद्योगों को प्रमुख राजस्व उत्पादक माना गया है, और कई जलीय कृषक उपभोग के लिए प्राथमिक प्रोटीन स्रोतों के रूप में झींगा और झींगा की खेती पर ध्यान केंद्रित करते हैं। बाजार मूल्य के संदर्भ में व्यापार की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण वस्तुओं में से एक झींगा माना जाता है। क्रस्टेशियन को दुनिया भर में उच्च मांग वाले आर्थिक रूप से प्रासंगिक जलीय कृषि उत्पादों के रूप में माना जाता है। 30 से अधिक विभिन्न प्रजातियों से 2017 में कुल क्रस्टेशियन जलीय कृषि उत्पादन 8.4 एमटी था, जिसका मूल्य 61.06 बिलियन अमरीकी डॉलर था, 2000 के बाद से प्रति वर्ष 9.92 प्रतिशत की औसत वार्षिक वृद्धि दर के साथ। समुद्री झींगा वर्तमान में क्रस्टेशियन एकाकल्चर पर 5.51 एम.टी. या कुल क्रस्टेशियन का 65.3 प्रतिशत (34.2 बिलियन अमरीकी डॉलर का मूल्य) के साथ हावी है, इसके बाद ताजे पानी की क्रस्टेशियन (2.53 एमटी या 29.9 प्रतिशत कुल क्रस्टेशियन) है और इसका मूल्य 24.3 बिलियन अमरीकी डॉलर है। यद्यपि झींगा वैश्विक जलीय कृषि उत्पादन का केवल 6 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है, वे व्यापारिक समुद्री खाद्य उत्पादों के उत्पादन मूल्य का लगभग 16 प्रतिशत योगदान करते हैं। हालांकि, वैश्विक मांग में वृद्धि के कारण, झींगा जलीय कृषि प्रणालियों की तीव्रता और विस्तार के दबाव ने अधिकांश जलीय कृषि व्यवसाय को नाजुक बना दिया है। वैश्विक कृषि में झींगा के उत्पादन में वृद्धि हुई है, लेकिन प्रमुख उत्पादक देशों, विशेष रूप से एशिया में, झींगा रोगों के कारण उत्पादन में गिरावट आई है। जलीय कृषि उद्योग में, एफ.ए.ओ. द्वारा बीमारी के प्रकोप से आर्थिक नुकसान प्रति वर्ष 9 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक होने का अनुमान लगाया गया है, जो विश्व कृषि मछली और शेलफिश उत्पादन के मूल्य का लगभग 15 प्रतिशत है।

होते हैं।

ए.एच.पी.एन.डी. की विशेषता झींगा हेपेटोपैन्क्रियाज के गंभीर शोष के साथ-साथ रोग के तीव्र चरण में अद्वितीय हिस्टोपैथोलॉजिकल परिवर्तन हैं। इसके अलावा, जैसे-जैसे बीमारी बढ़ती है, किसी भी रोगजनक की अनुपस्थिति में हेपेटोपैन्क्रिएटिक या पाचन तंत्र उपकला कोशिकाओं का बड़े पैमाने पर स्लोइंग झींगा पोस्ट-लार्वा स्टॉकिंग के लगभग पहले 30 दिनों के भीतर देखा जा सकता है। वास्तव में, ए.एच.पी.एन.डी. पैदा करने वाले बैक्टीरिया मुख्य रूप से पाचन ग्रंथि (हेपेटोपैन्क्रियाज) को लक्षित करते हैं और हेपेटोपैन्क्रिएटिक आर (रिसॉर्प्टिव) बी (फफोला) एफ (फाइब्रिलर) और ई (भ्रूण) कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप झींगा की शिथिलता और बड़े पैमाने पर मृत्यु होती है।

ए.एच.पी.एन.डी. से प्रभावित झींगा सुस्ती, एनोरेक्सिया, धीमी वृद्धि, खाली पाचन तंत्र और पीला से सफेद हेपेटोपैन्क्रियाज प्रदर्शित करता है। हालांकि, एचपीएनडी के लिए ये रिपोर्ट किए गए नैदानिक संकेत कुछ अन्य बीमारियों के लिए आम हैं। उदाहरण के लिए, रासायनिक कारक, उदाहरण, नाइट्राइट और अमोनिया या माध्यमिक बैक्टीरिया (पारंपरिक विब्रियोसिस) और वायरल (व्हाइट स्पॉट सिंड्रोम

वायरस, येलो हेड वायरस, आदि) द्वारा प्रेरित सकल संकेत। संक्रमण ए.एच.पी.एन.डी.विकृति का कारण भी बन सकता है। इसलिए, झींगा में ए.एच.पी.एन.डी. के पुष्टिकारक निदान के लिए सकल नैदानिक संकेतों के साथ बैक्टीरियल विषाणु कारक और ए.एच.पी.एन.डी.-विशिष्ट कोशिकीय परिवर्तनों की पहचान को सहायक माना जाता है।

**ए.एच.पी.एन.डी.वी. पैराहेमोलिटिकस के कारक एजेंट के रूप में**

विब्रियो पैराहेमोलिटिकस झींगा में ए.एच.पी.एन.डी. का कारण बनने वाली प्रमुख प्रजाति है। वी. पैराहाइमोलिटिकस विषमग्रामीय ग्राम-नकारात्मक, गैर-बीजाणु बनाने वाला और अल्पविराम के आकार

पी. को द्विआधारी पी. आर. ए. वी. पी./पी. आर. बी. वी. पी. विषाक्त पदार्थों को कूटबद्ध करते हैं।

**ए.एच.पी.एन.डी. के सकल संकेत और हिस्टोपैथोलॉजी**

प्राथमिक निदान विधि के रूप में, ए.एच.पी.एन.डी. के नैदानिक संकेतों का उपयोग प्रभावित झींगा की जांच के लिए किया जाता है। ए.एच.पी.एन.डी. से प्रभावित झींगा विशिष्ट रूप से एक पीला और सिकुड़ा हुआ हेपेटोपैन्क्रियाज (एच. पी.) और गैस्ट्रिक और आंत खाली होना प्रदर्शित करते हैं। इसके व्यवहार में कुछ बदलाव जैसे सुस्ती, सर्पिल तैरना और कम भोजन भी देखा गया।

रोग के प्रारंभिक से मध्य चरण में एचपीएनडी की मुख्य और अनूठी ऊतकीय विशेषताएँ हेपेटोपैन्क्रिएटिक ट्यूबुल एपिथेलियल कोशिकाओं का ढलना और बड़े पैमाने पर गोल होना है जिसमें कोई पता लगाने योग्य रोगजनक नहीं है। एचपीएनडी के प्रारंभिक चरणों में, रोग की विशेषता बी (ब्लिस्टर लाइक) एफ (फाइब्रिलर) और आर (रिसॉर्प्टिव) कोशिकाओं के मध्य से दूरस्थ शिथिलता, प्रमुख कैरिओमेगाली और ई कोशिकाओं में माइटोटिक गतिविधि की कमी है। जबरदस्त द्वितीयक संक्रमण द्वारा वर्णित अंतिम चरणों का मूल्यांकन करना मुश्किल हो सकता है। उदाहरण के लिए, रोग के अंतिम चरणों में हीमोसाइट्स का विशाल एकत्रीकरण और मेलेनाइड ग्रैनुलोमा का उद्भव होता है और ट्यूबुल लुमेन में विभिन्न बैक्टीरिया की कई कॉलोनियों के संक्रमण के साथ होता है। संक्रमित झींगा में इन अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवाणु प्रजातियों के गैर-एचपीएनडी आइसोलेट्स द्वारा लाए गए गंभीर और अन्य पारंपरिक संक्रमणों से आसानी से अलग नहीं किया जा सकता है।

**झींगा में ए.एच.पी.एन.डी. का निदान**

झींगा में या कल्चर आवास में वी. पैराहेमोलिटिकस का जल्दी पता लगाने से ए.एच.पी.एन.डी. के प्रकोप को रोका जा सकता है। चूंकि विषाक्त पी. वी. ए. प्लास्मिड जो द्विआधारी पी. आर. ए. बी. विष को आश्रय देता है, पहली बार एक दशक पहले पहचाना गया था और इसकी विशेषता थी,

इन दोनों विष जीन का उपयोग ए.एच.पी.एन.डी. निदान के लिए महत्वपूर्ण मार्कर के रूप में किया गया है। प्लास्मिड के साथ-साथ पी. आर. ए. बी. विष का पता लगाने के लिए डिजाइन किए गए विशिष्ट प्राइमर या जांच का आमतौर पर उपयोग किया जाता है। व्यावसायिक रूप से उपलब्ध अधिकांश ए.एच.पी.एन.डी. नैदानिक किट पी. सी. आर.-आधारित हैं और या तो पारंपरिक पी. सी. आर., नेस्टेड पी. सी. आर. या रियल-टाइम पी. सी. आर. तकनीकों का उपयोग करते हैं लेकिन इन किटों में समय लगता है और महंगे उपकरणों की आवश्यकता होती है। नैदानिक प्रयोगशालाओं के लिए, शोधकर्ताओं ने हाल ही में ए.एच.पी.एन.डी.का पता लगाने वाली प्रणालियों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया है जो उच्च-थ्रूपुट और बड़ी हुई संवेदनशीलता और विशिष्टता के साथ कम समय लेने वाली हैं। उदाहरण के लिए, ए.एच.पी.एन.डी. का आसान, उच्च-थ्रूपुट पता लगाने के लिए पी. आर. ए., पी. आर. बी., झींगा 18 एस और बैक्टीरियल 16 एस जीन को लक्षित करने वाले प्राइमर का उपयोग करते हुए एक मल्टीप्लेक्स रियल-टाइम पी. सी. आर. विकसित किया गया है।

(क्रमशः)



का बैक्टीरिया है जिसमें ध्रुवीय फ्लैजेलम या कई फ्लैजेल्ला होते हैं। यह रोगजनक ज्वारीय और तटीय वातावरण के ऑटोकथोनस माइक्रोफ्लोरा का हिस्सा है, साथ ही दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय से समशीतोष्ण क्षेत्रों में मछली, द्विभुज और क्रस्टेशियन का हिस्सा है। मछली और शेलफिश प्रजातियों (झींगा और मोलस्क सहित) के अलावा इस जीवाणु को पानी, तलछट, प्लैकटन और समुद्री स्तनधारियों से अलग किया गया है।

पैराहेमोलिटिकस उच्च सोडियम क्लोराइड सांद्रता में पनप सकता है, 0.5 से 10 प्रतिशत तक 1 से 3 प्रतिशत के बीच इष्टतम स्तर के साथ, और मध्यम तापमान (5 से 37 °C) में बढ़ सकता है। झींगा जलीय कृषि में, वी. पैराहेमोलिटिकस एक महत्वपूर्ण जलीय रोगजनक है और कई उपभेद तीव्र हेपेटोपैन्क्रिएटिक नेक्रोसिस रोग (ए.एच.पी.एन.डी.) और अन्य महत्वपूर्ण बीमारी पैदा करने में सक्षम हैं जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण आर्थिक नुकसान होता है। ए.एच.पी.एन.डी. में संलिप्त वी. पैराहेमोलिटिकस उपभेद पी. वी. ए. 1 प्लास्मिड (70 के. बी.) ले जाने में अद्वितीय हैं जो विषाणु जीन, पी. आर. ए. वी. पी. और पी. आर. बी. वी.

# समस्या-समाधान

**समस्या-** गेहूँ की पत्तियों पर काला-काला चूर्ण दिखाई दे रहा है। तनों पर भी इसी प्रकार का आक्रमण है कौनसा रोग है, क्या उपाय है।

— विक्रम सिंह



**समाधान-** आपके क्षेत्र में कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा दूरभाष पर चर्चा होने के बाद हम आपको बता सकते हैं कि गेहूँ की पत्तियों पर कंडुआ रोग आया है इसे लोग गेहूँ का काला गेरुआ मान रहे थे परंतु काले गेरुए के लक्षण के विपरीत पत्तियों पर काली चूर्ण पत्तियों का कंडुआ ही है। जो एक अर्से के बाद खेतों में दिखाई दिया उसके पौधे रोग के फैलाव के लिये उपयुक्त तापमान एवं आर्द्रता है। गेहूँ की बीमारी बंट और पत्तियों का कंडुआ ऐसी बीमारी है जिसकी कवक बीज और भूमि चालित होती है। अर्थात् बीज के द्वारा खेतों में आकर भूमि में लुकी-छिपी रहती है। और वातावरण उपयुक्त होते ही प्रदर्शित हो जाती है। पत्तियों पर छिड़काव से लाभ नहीं होगा आने वाले वर्षों में ये करें-

● बीज पूरी तरह बदल दें साथ ही फसल का फेरबदल जरूर करें।

● बीज का उपचार वीटावैक्स 2 ग्राम दवा/किलो बीज का करें।

**समस्या-** मैंने दो एकड़ में मसूर लगाई थी कटाई के लिये तैयार होने वाली है, इसे काटकर क्या मूंग लगाया जा सकता है। विस्तार से बतायें।

— माखनलाल मौर्य

**समाधान-** आपकी मसूर कटने वाली है आपके पास पानी की सुविधा है इसलिये आप सरलता से मूंग लगा सकते हैं और मूंग उत्पादन की तकनीकी का विस्तार से प्रकाशन किया जा चुका है। आप हमारे सदस्य हैं कृपया उक्त लेख को पढ़कर अतिरिक्त जानकारी अवश्य प्राप्त करें। फिलहाल तकनीकी के प्रमुख

## निवेदन

**समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें। एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें। वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.**

## समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स,  
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)  
फोन-0755-4248100,2554864

बिन्दुओं का उल्लेख निम्नानुसार है।

● प्रमुख जातियों में के 851, पी.एस.16, पी.एस. 7, पूसा वैशाखी।

● बीज का उपचार 3 ग्राम थाईरम प्रति किलो बीज का करें।

● 40 किलो यूरिया, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा 30 किलो म्यूरेंट ऑफ पोटाश/हे.

● फूल आने से पहले और दाना भरते समय सिंचाई आवश्यक है 75 प्रतिशत फल्लियां बन जाने के बाद सिंचाई नहीं करें। पहली सिंचाई बुआई के 15 दिनों बाद करें।

**समस्या-** चने की घेटी आने लगी है कहीं-कहीं इल्ली का प्रकोप देखा है। उपाय बतायें।

— अमरनाथ वर्मा

**समाधान-** आपने चने की बुआई में देरी कर दी होगी। घेटी की अवस्था में इल्ली के आक्रमण से नुकसान संभव है आप शीघ्र ही निम्न उपचार करें।



● कीटनाशी किनालफास 25 ई.सी. जो एक संपर्क एवं दैहिक कीटनाशक है। 1 ली./500 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।

● अथवा प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. कीटनाशक जो अंड संपर्क एवं उदरनाशी है की 1.5 लीटर मात्रा 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।

● यदि खेत में T आकार की खूटियां नहीं लगाई हो तो तुरंत लगाये ताकि इल्ली के जीवनचक्र में बाधा पहुंच सकें।

**समस्या-** चूहों को मारने की दवा एवं कल्चरल उपाय बतायें।

— छोटे लाल राय

**समाधान-** चूहा और दीमक दोनों सामाजिक त्रासदी है। जिनका असर खेती तथा घरों तक होता है। चूहा एक बहुत ही चालाक और सतर्क प्राणी होता है। उसको नियंत्रण में रखने के लिये छल/प्रपंच करना होता है।

● खेत में जगह-जगह घूम कर चूहों के सक्रिय बिलों का सर्वेक्षण करें।

● फूले चने, मुरमुरे इत्यादि को रोज बिल के आसपास दो दिनों तक डालकर चूहों के लिये आकर्षण पैदा करें।

● अच्छा स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ देने के बाद 4 दिन बाद जिंक फास्फेट 2.5 ग्राम को 100 ग्राम आटे में मिलायें। उसमें तेल तथा गुड़ भी डालें। स्वादिष्ट गोलियों को सक्रिय बिलों के पास रखें।

● खेत में जगह-जगह खूटे गाड़ें ताकि उस पर रात में उल्लू बैठ सकें और चूहों को उठा सकें।

## प्राकृतिक खेती - अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

### रिसोर्स और सपोर्ट

मुझे भारत में प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण और शिक्षण संसाधन कहाँ मिल सकते हैं?

लोकल कृषि विस्तार सेवा, सरकारी प्रोग्राम, एनजीओ, और प्राकृतिक खेती पर केन्द्रित करने वाले ऑनलाइन कोर्स और फोरम से ट्रेनिंग लें।

क्या कोई सरकारी पहल या प्रोग्राम हैं जो प्राकृतिक खेती को सपोर्ट करते हैं?

हाँ, परंपरागत कृषि विकास योजना (RKVY) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) जैसी सरकारी पहल प्राकृतिक खेती के तरीकों के लिए सपोर्ट देती हैं।

क्या मैं सहायता और नेटवर्किंग के लिए किसी स्थानीय प्राकृतिक खेती को-ऑपरेटिव या एसोसिएशन से जुड़ सकता हूँ?

हाँ, लोकल को-ऑपरेटिव या एसोसिएशन से जुड़ने से कोमती सहयोग, ज्ञान साझा और आदानों तक पहुँच मिल सकती है।

प्राकृतिक खेती करने वाले भारतीय किसानों के लिए कौन से ऑनलाइन फोरम या कम्युनिटी उपलब्ध हैं?

सोशल मीडिया ग्रुप, फोरम और प्राकृतिक खेती के लिए समर्पित वेबसाइट जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आपको मार्गदर्शन और सहयोग के लिए एक जैसी सोच वाले किसानों और एक्सपर्ट से

जोड़ सकते हैं।

बायोडायवर्सिटी या जैव विविधता क्या है?

जैव विविधता या बायोडायवर्सिटी का मतलब है किसी इकोसिस्टम में रहने वाले पौधों, जानवरों और दूसरे जीवों की संख्या और वैरायटी।

किसानों के लिए बायोडायवर्सिटी की समझ क्यों जरूरी है?

बायोडायवर्सिटी किसानों को यह समझने में मदद करती है कि इकोसिस्टम में अलग-अलग स्पीशीज एक-दूसरे के साथ कैसे इंटरैक्ट करती हैं। यह जानकारी हमें यह समझने में मदद कर सकती है कि हम अपनी ज़मीन को बेहतर तरीके से कैसे मैनेज कर सकते हैं ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी फूड सप्लाई को सस्टेनेबल तरीके से बढ़ा सकें।

प्राकृतिक फार्मिंग बायोडायवर्सिटी बनाए रखने में कैसे मदद करती है?

प्राकृतिक फार्मिंग में नुकसानदायक केमिकल फर्टिलाइजर का इस्तेमाल नहीं होता, और यह मिट्टी में जैविक मैटर बढ़ाने पर केन्द्रित रहती है। स्वस्थ मिट्टी फ़ायदेमंद माइक्रोब्स, केंचुओं वगैरह जैसी ज़्यादा बायोडायवर्सिटी को सहयोग करती है। यह फ़ायदेमंद कीड़ों/पक्षियों/परागण की आबादी बनाए रखने में मदद करती है।

## कृषक जगत

## बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027
पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएँ फूलों से बगिया	घर की बगिया	
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95	
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050	

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर निशान लगाएं

016  017  019  020  025  027  031  032  034  040  041  050

नाम \_\_\_\_\_

ग्राम \_\_\_\_\_ पोस्ट \_\_\_\_\_ तह. \_\_\_\_\_

जिला \_\_\_\_\_ फोन/मोबा. \_\_\_\_\_

कुल राशि \_\_\_\_\_ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या \_\_\_\_\_

संलग्न ड्राफ्ट नं. \_\_\_\_\_ मनी आर्डर रसीद क्र. \_\_\_\_\_ वी.पी. भेजें

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम

14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011

फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

स्वास्थ्य

# फल जो हैं स्वास्थ्यवर्द्धक

फल एक ऐसा हेल्दी स्नेक है जिसे कभी भी खाया जा सकता है। प्रतिदिन फल खाने से कई बीमारियों के होने की आशंका कम होती है। फल तो सब खाते हैं पर कौन सा फल फायदेमंद होता है हममें से कितने जानते हैं? अगर आपके साथ भी ऐसा ही है तो जानिए कुछ फलों के बारे में खास बातें।



**सेब**

डॉक्टरों का मानना है कि एक सेब प्रतिदिन खाने से कई एक फायदे मिलते हैं। सेब विटामिन ए व सी से भरपूर फल है। इसमें कार्बोहाइड्रेट व सेल्यूलोज भी होता है। इसलिए सेब के सेवन से अत्यरक्तता, तेज बुखार, कमजोरी, निराशा, आर्थराइटिस, मुंहासे व रक्त की अशुद्धियां जैसी समस्याएं दूर होती हैं तथा क्षीण जीवनशक्ति के उपचार में मदद मिलती है।

**आम**

फलों का राजा कहा जाने वाला आम आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। यह अपच, कब्ज और एसिडिटी जैसी समस्याओं को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फाइबर से भरपूर आम मल त्याग और चयापचय दर को बढ़ाने में मदद करता है।



**तरबूज**



तरबूज आकर्षक और स्वास्थ्य वर्द्धक फल है। तरबूज खाना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यह शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। हमें वही फल ज्यादा खाने चाहिए जो शरीर में पानी की आपूर्ति भी करते रहें। तरबूज रक्ताचाप को संतुलित रखता है और कई बीमारियां दूर करता है। इसके और भी फायदे हैं जैसे खाना खाने के उपरांत तरबूज का रस पीने से भोजन शीघ्र पच जाता है। मोटापा कम करने वालों के लिए यह उत्तम आहार है।

**संतरा**

संतरा विटामिन सी से परिपूर्ण होता है, जिससे हमारे शरीर का प्रतिरक्षात्र मजबूत बनता है और बाहर से आने वाली बीमारियों से हमारे शरीर की रक्षा करता है। सर्दी, जुकाम, खांसी होने पर संतरे का सेवन लाभप्रद होता है।



**अनार**

अनार पतले पारदर्शी लाल रंग के रसीले दानों का फल है। इसमें साइट्रिक अम्ल के साथ विटामिन बी व सी होता है। अनार में एंटी आक्सीडेंट विशेषता होने के कारण यह खराब कोलेस्ट्रॉल को शुरुआती अवस्था में ही रोक देता है। अनार का जूस खून को पतला बनाने की विशेषता भी रखता है जिससे खून के थक्के नहीं बनते।

**चीकू**

चीकू एक ऐसा फल है जो हर मौसम में आसानी से मिल जाता है और बहुत स्वादिष्ट भी होता है। चीकू के फल में 71 प्रतिशत पानी, 1.5 प्रतिशत प्रोटीन, 1.5 प्रतिशत चर्बी और साढ़े पच्चीस प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है। इसमें विटामिन ए तथा विटामिन सी की अच्छी मात्रा होती है।



**पपीता**

पपीता सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। जहां इससे पेट संबंधी परेशानियां दूर होती हैं, वहीं त्वचा भी काफी अच्छी हो जाती है। जिन लोगों को किडनी की तकलीफ होती है उन्हें रोज पपीता खाना चाहिए। पपीता खाने से आंखों की रोशनी भी अच्छी बनी रहती है। अगर पेट में कीड़े हों, तो कच्चे पपीते का जूस फायदा करता है।

स्वास्थ्य/शिक्षण

## डायबिटीज के लिए सरल देशी नुस्खे

**डायबिटीज अब उम्र, देश व परिस्थिति की सीमाओं को लांघ चुका है। इसके मरीजों का तेजी से बढ़ता आंकड़ा दुनियाभर में चिंता का विषय बन चुका है। जानते हैं कुछ देशी नुस्खे मधुमेह रोगियों के लिए- नींबू**

मधुमेह के मरीज को प्यास अधिक लगती है। अतः बार-बार प्यास लगने की अवस्था में नींबू निचोड़कर पीने से प्यास की अधिकता शांत होती है।



**खीरा**

मधुमेह के मरीजों को भूख से थोड़ा कम तथा हल्का भोजन लेने की सलाह दी जाती है। ऐसे में बार-बार भूख महसूस होती है। इस स्थिति में खीरा खाकर भूख मिटाना चाहिए।



**गाजर-पालक**

इन रोगियों को गाजर-पालक का रस मिलाकर पीना चाहिए। इससे आंखों की कमजोरी दूर होती है।

**शलजम**

मधुमेह के रोगी को तरौई, लौकी, परवल, पालक, पपीता आदि का प्रयोग ज्यादा करना चाहिए। शलजम के प्रयोग से भी रक्त में स्थित शर्करा की मात्रा कम होने लगती है। अतः शलजम की सब्जी, पराटे, सलाद आदि चीजें स्वाद बदल-बदलकर ले सकते हैं।



**जामुन**

मधुमेह के उपचार में जामुन एक औषधि है। जामुन की गुठली, छाल, रस और गुदा सभी मधुमेह में बेहद फायदेमंद हैं। जामुन के बीजों में जाम्बोलिन नामक तत्व पाया जाता है, जो स्टार्च को शर्करा में बदलने से रोकता है। गुठली का बारीक चूर्ण बनाकर रख लेना चाहिए। दिन में दो-तीन बार, तीन ग्राम की मात्रा में पानी के साथ सेवन करने से मूत्र में शुगर कम होती है।

**करेले**

प्राचीन काल से करेले को मधुमेह की औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसका कड़वा रस शुगर की मात्रा कम करता है। मधुमेह के रोगी को इसका रस रोज पीना चाहिए। इससे आश्चर्यजनक लाभ मिलता है।



**मैथी**

मधुमेह के उपचार के लिए मैथीदाने के प्रयोग का भी बहुत चर्चा है। दवा कंपनियां मैथी के पावडर को बाजार तक ले आई हैं। इससे पुराना मधुमेह भी ठीक हो जाता है। मैथीदानों का चूर्ण बनाकर रख लीजिए। नित्य प्रातः खाली पेट दो टी-स्पून चूर्ण पानी के साथ निगल लीजिए। कुछ दिनों में आप इसकी अद्भुत क्षमता देखकर चकित रह जाएंगे।

**गेहूं के जवारे**

गेहूं के पौधों में रोगनाशक गुण विद्यमान हैं। गेहूं के छोटे-छोटे पौधों का रस असाध्य बीमारियों को भी जड़ से मिटा डालता है। इसका रस मनुष्य के रक्त से चालीस फीसदी मेल खाता है। इसे ग्रीन ब्लड के नाम से पुकारा जाता है। जवारे का ताजा रस निकालकर आधा कप रोगी को तत्काल पिला दीजिए।

## कैसे लगाएं पारिवारिक सदस्यों के फोटो



- तीन व्यक्तियों की एक सीध में एकाकी फोटो हो तो घर में न रखें।
- फोटो कभी भी टांगें नहीं।
- अगर दीवार पर फोटो लगानी हो तो उसके नीचे एक लकड़ी की पट्टी लगाएं अर्थात् वह फोटो लकड़ी के पट्टे पर टिके।
- फोटो का मुख बाथरूम की ओर न हो।
- प्रमुख द्वार की ओर कदापि न हो।
- सीढ़ियों की ओर न दिखे।
- तलघर में कभी भी परिवार के सदस्यों की अथवा ईश्वर की फोटो न लगाएं।

## खेल, नृत्य और तैरना फायदेमंद

फिटनेस के लिए फुटबॉल और वॉलीबॉल के दो गेम पर्याप्त हैं। दोनों खेलों के लिए पूरी टीम हो, जरूरी नहीं है। शौक के तौर पर आधी टीम से भी इन्हें खेला जा सकता है। बैडमिंटन भी एक जबरदस्त कसरत है। इसके अलावा डांसिंग यानी एरोबिक्स भी एक तरह की कसरत ही है। इससे दिल और फेफड़े मजबूत हो जाते हैं। साथ ही शारीरिक संतुलन भी सुधर जाता है। आप जितनी मर्जी हो, उतने समय तक डांस कर सकते हैं।

कहा जाता है कि तैरने और घुड़सवारी से बड़ी कोई कसरत नहीं होती, जिसमें शरीर के हर हिस्से का इस्तेमाल किया जाता है। तैराकी शुरू करने में उतना भी खर्च नहीं करना पड़ता, जितना दौड़ने के जूते खरीदने में हो सकता है। दरअसल तैराकी के लिए आपको सिर्फ एक बढ़िया स्वीमिंग-कॉस्ट्यूम की जरूरत होती है।

यदि आप किसी नदी या तालाब में तैराकी करते हैं तो इससे अच्छा विकल्प नहीं है।

### पाक्षिक पंचांग

2 फरवरी से 15 फरवरी 2026 तक  
विक्रम संवत् 2082  
फाल्गुन कृष्ण 1 से फाल्गुन कृष्ण 13 तक

दि.	माह	वार	तिथि/त्यौहार
2	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण 1
3	फरवरी	मंगल	2
4	फरवरी	बुध	3
5	फरवरी	गुरु	4 गणेश चतुर्थी व्रत
6	फरवरी	शुक्र	5
7	फरवरी	शनि	6
8	फरवरी	रवि	7
9	फरवरी	सोम	8
10	फरवरी	मंगल	8
11	फरवरी	बुध	9
12	फरवरी	गुरु	10
13	फरवरी	शुक्र	11 विजया एकादशी
14	फरवरी	शनि	12 प्रदोष व्रत
15	फरवरी	रवि	13 महाशिवरात्रि

पशुपालन विभाग द्वारा राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत संभाग स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय पशुधन मिशन पशुपालकों की आय बढ़ाने का प्रभावी माध्यम : डॉ. मीना

जयपुर। पशुपालन विभाग द्वारा राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत संभाग स्तरीय कार्यशाला का आयोजन आगरा रोड स्थित राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान में किया गया। कार्यशाला में जयपुर संभाग के पशुपालकों ने भाग लिया जिसमें राष्ट्रीय पशुधन से जुड़े विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए गए।

कार्यशाला का उद्देश्य राष्ट्रीय पशुधन मिशन की विभिन्न योजनाओं, नवीन दिशा निर्देशों, तकनीकी नवाचारों तथा लाभार्थी केंद्रित कार्यप्रणाली की विस्तृत जानकारी पशुपालकों को प्रदान करना था।

इस अवसर पर पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. सुरेश चंद मीना ने कहा कि राष्ट्रीय पशुधन मिशन पशुपालकों की आय बढ़ाने तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में यह संभाग स्तरीय कार्यशाला एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रकार की कार्यशालाएं पशुपालकों की आय में वृद्धि और पशुधन क्षेत्र के समग्र विकास

में सहायक सिद्ध होंगी। उन्होंने कहा कि योजनाओं की सही जानकारी, तकनीकी नवाचार तथा विभागीय



दिशानिर्देश जमीनी स्तर तक पहुंचाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि यदि सही जानकारी सही समय पर पशुपालक तक पहुंच जाए तो उसका सीधा लाभ पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन और आय में बढ़ोतरी के रूप में मिलता है। उन्होंने पशुपालकों से अपील की कि वे विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर उनका अधिकतम लाभ उठाएं तथा वैज्ञानिक विधि से पशुपालन अपनाकर उत्पादन लागत कम करें और अपनी आमदनी बढ़ाएं।

विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. प्रवीण

कुमार सेन ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय पशुधन मिशन के विषय में सभी को संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराना है जिससे फील्ड के लोगों तक भी यह जानकारी पहुंचे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत भेड़-बकरी पालन, कुकट पालन तथा अन्य नस्ल सुधार से संबंधित विभिन्न योजनाओं में अनुदान और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

विभाग के उप निदेशक तथा योजना प्रभारी डॉ. बी. एम. गोयल ने राष्ट्रीय पशुधन मिशन के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कार्यशाला की रूपरेखा पर विस्तृत प्रकाश डाला। कार्यशाला में तकनीकी सत्रों के दौरान डॉ. लेनिन, डॉ. सीमा मिश्रा तथा डॉ. दीपक आसीवाल ने अपने अपने विषय पर पशुपालकों से चर्चा की और उन्हें जानकारी उपलब्ध कराई। कार्यशाला में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के एजीएम संदीप कुमार ने भी विचार व्यक्त किए।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, शेथर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
  - बीज ■ औषधीय फसल
- विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक
- अधिकतम 25 शब्द
  - अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण  
साइज : फिक्स साइज- 8 x 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवलस, तीर्थ यात्राएँ, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएँ, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएँ, चिकित्सक, एग्री वलीनिक आदि।

**कृषक जगत**  
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.  
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)  
**62 62 166 222**  
www.krishakjagat.org @krishakjagat @krishakjagatindia @krishak\_jagat

किसानों की आमदनी के स्थायी आधार के रूप में  
उभर रहा जयपुर का पंच गौरव आंवला

कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को दी आंवले की फसल की जानकारी



जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा की मंशानुसार जयपुर जिले में पंच गौरव के संरक्षण, संवर्धन एवं समग्र विकास को गति प्रदान करने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा निरंतर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। 'एक जिला-एक उपज' की अवधारणा के अंतर्गत जयपुर जिले के पंच गौरव में आंवले को शामिल किया गया है, ताकि किसानों की आय बढ़ाने के साथ-साथ जिले की विशिष्ट पहचान को भी सुदृढ़ किया जा सके।

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशों की अनुपालना में जयपुर जिले की समस्त पंचायत समितियों में प्रथम चरण में प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर कृषकों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण सेमिनार आयोजित किए जा रहे हैं। इन सेमिनारों के माध्यम से कृषकों को आंवला फल के औषधीय गुणों, इसकी खेती से होने वाली स्थायी आमदनी की संभावनाओं तथा प्रसंस्करण से संबंधित प्रायोगिक जानकारी प्रदान की जा रही है।

अतिरिक्त जिला कलक्टर श्रीमती विनीता सिंह ने बताया कि इन प्रशिक्षण सेमिनार में महिला स्वयं सहायता समूहों, महिला कृषकों एवं युवा कृषकों की विशेष सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है। कृषि विज्ञान केन्द्र, आईएचआईटीसी दुर्गापुरा, जयपुर तथा कृषि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के माध्यम से प्रतिभागियों को दो दिवसीय आंवला

प्रोसेसिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे वे मूल्य संवर्धन की दिशा में आगे बढ़ सकें।

मुख्य आयोजना अधिकारी डॉ. सुदीप कुमावत ने बताया कि इसी क्रम में शाहपुरा स्थित कृषि प्रशिक्षण हॉल में पंच गौरव प्रशिक्षण सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के दौरान कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को आंवला खेती के आधुनिक एवं उन्नत तरीकों, उत्पादन बढ़ाने तथा गुणवत्ता सुधार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दीं।

उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों, कृषक महिलाओं एवं युवा कृषकों के क्षमता संवर्धन के लिए कुल 38 लाख रुपये व्यय किए जाएंगे। आंवला को जयपुर की पहचान के रूप में स्थापित करने तथा किसानों की आय का स्थायी साधन विकसित करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

डॉ. कुमावत ने बताया कि आंवला एक टेबल फल नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उपयोग प्रसंस्कृत उत्पादों के रूप में किया जाता है। घरेलू स्तर पर आंवला प्रोसेसिंग को बढ़ावा देकर स्थानीय स्तर पर इसकी मांग में वृद्धि की जा सकती है, जिससे न केवल किसानों को बेहतर मूल्य मिलेगा, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

**78 वर्ष** **कृषक जगत** राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक

- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

**25 लाख पाठक**

कृषक जगत की सदस्यता राशि

- ⇒ वार्षिक रु. 600/-
- ⇒ दो वर्ष रु. 1000/-
- ⇒ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से 'कृषक जगत' - प्रति सप्ताह □ भोपाल □ जयपुर □ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....

ग्राम .....पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....

वि.ख. ....तह. ....

जिला .....पिन [ ] [ ] [ ] [ ] राज्य .....

शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....

ट्रेक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. ....

ई-मेल .....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगर/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

\*कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम\* Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861  
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861  
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें  
प्रसार प्रबंधक **कृषक जगत**

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org  
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952  
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो. : 9826255862  
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864  
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

## गणतंत्र दिवस की चित्रमय झलकियां



गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने शासन सचिवालय में राष्ट्रध्वज फहराया।



पशुपालन विभाग में गणतंत्र दिवस समारोह पर शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने राष्ट्रीयध्वज फहराया।



अपेक्स बैंक में 77वां गणतंत्र दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। प्रबंध निदेशक श्री रणजीत सिंह चूण्डावत ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और परेड का निरीक्षण किया।



पंत कृषि भवन में कृषि आयुक्त सुश्री चिन्मयी गोपाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।



राजफेड के प्रबंध निदेशक श्री बचनेश कुमार अग्रवाल ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजफेड परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

## मुख्यमंत्री के निर्देश पर 41 जिलों में पशु चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण

मंगला पशु बीमा योजना में 1 हजार पशु पालकों से किया संवाद

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर प्रदेश के 41 जिलों में जिला कलक्टर तथा अन्य अधिकारियों ने पशुपालन विभाग के विभिन्न श्रेणी के पशु चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों ने राज्य सरकार की ओर से पशुपालकों को उपलब्ध कराई जा रही पशु चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता, संसाधनों की उपलब्धता तथा व्यवस्थाओं की वास्तविक स्थिति का आकलन किया।

मुख्यमंत्री के निर्देशन में प्रदेश के 41 जिलों में कुल 1017 संस्थानों का निरीक्षण किया गया, जिनमें से 68 पॉलीक्लिनिक, 246 प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय, 299 पशु चिकित्सालय, 83 ब्लॉक वेटनरी हेल्थ ऑफिस तथा 321 उप चिकित्सा केंद्र शामिल हैं। इस दौरान पशु चिकित्सा संस्थानों में साफ-सफाई सहित जरूरी व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया गया। वहीं, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना में एक हजार पशुपालकों से संवाद किया गया। इस निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने पशु चिकित्सा संस्थानों में आवश्यकतानुसार सुधार के भी निर्देश दिए।

जिला कलक्टर, जिला परिषद मुख्य कार्यकारी अधिकारी, अतिरिक्त जिला कलक्टर, उपखण्ड अधिकारियों, तहसीलदार तथा विकास अधिकारियों द्वारा निरीक्षण के दौरान विभिन्न श्रेणी के पशु चिकित्सालयों एवं उप-केंद्रों में दवाओं की उपलब्धता, टीकाकरण व्यवस्था, चिकित्सकीय उपकरण, साफ-सफाई, रिकॉर्ड

संधारण एवं स्टाफ की उपस्थिति की समीक्षा की गई। इस निरीक्षण में मौके पर उपस्थित पशुपालकों से अधिकारियों ने संवाद कर समस्याएं जानी और उनके सुझाव प्राप्त किए।

राज्य सरकार पशुपालकों के कल्याण और पशुओं के गुणवत्तापूर्ण उपचार के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर शनिवार को प्रदेश में किए इस निरीक्षण से पशु चिकित्सा संस्थानों में उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा और जमीनी स्तर पर योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन भी सुनिश्चित हो सकेगा।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर प्रदेशभर में जिला प्रशासन द्वारा चिकित्सा संस्थानों का भी गहन औचक निरीक्षण किया गया था।

## 5 करोड़ 60 लाख की लागत से 5 नवीन किसान पथ बनेंगे

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने नागौर जिले की कृषि उपज मण्डी समिति, मेड़ता सिटी के अंतर्गत 5 नवीन सम्पर्क सड़कों (किसान पथ) के निर्माण के लिए 5 करोड़ 60 लाख रुपये से अधिक की राशि की स्वीकृति दी है। इन संपर्क सड़कों के निर्माण से ग्रामीणों व किसानों के आवागमन एवं कृषि जिनसों को मण्डी तक लाने में सुविधा होगी।

## गौशालाओं को अनुदान भी देंगे और निर्माण भी कराएंगे : गोपालन मंत्री

जयपुर। गोपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में गौवंश के संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। गौवंश की सेवा हमारी संस्कृति और परम्परा का अभिन्न अंग है। उन्होंने सदन में कहा कि निराश्रित गौवंश के लिए राज्य में 4 हजार से अधिक गौशालाएं संचालित हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 में अनुदान के लिए पात्र 3 हजार 310 गौशालाओं से प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

श्री कुमावत ने कहा कि कई स्थानों पर गौचर भूमि में गौशालाएं संचालित हैं लेकिन एक रिट प्रकरण के कारण भूमि उनके नाम पर आवंटित नहीं हो रही है। उन्होंने बताया कि राजस्व विभाग के एक नए परिपत्र के अनुसार जिस भी ग्राम पंचायत में सिवायक चक भूमि नहीं है लेकिन गौवंश के लिए पर्याप्त गौचर है, वहां गौशालाओं के लिए भूमि आवंटित हो सकती है। उन्होंने सदन में बताया कि ऐसे प्रकरणों में जिला कलेक्टर के माध्यम से

नियमानुसार भूमि आवंटन करवाया जा सकता है।

गोपालन मंत्री ने विधायक श्री बहादुर सिंह के पूरक प्रश्न के जवाब में कहा कि ग्राम पंचायतों में चारागाह भूमि पंचायती राज विभाग के अंतर्गत आती है। यदि उस पर अतिक्रमण है तो शीघ्र हटाया जाना चाहिए। उन्होंने पंचायती राज मंत्री से आग्रह किया कि ऐसे प्रकरणों को चिंहित कर अतिक्रमण हटाने की कार्यवाई की जाए। श्री कुमावत ने कहा कि प्रदेश में नई गौशालाएं और खुलनी चाहिए जिससे निराश्रित गौवंश की उचित देखभाल संभव हो सके।

उन्होंने बताया कि प्रदेश में 'पशु आश्रय स्थल योजना', 'पंचायत समिति स्तरीय नंदीशाला जन सहभागिता योजना' और 'गौशाला विकास योजना' संचालित है। उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया कि इन योजनाओं के बारे में अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करें। नियमानुसार नई गौशालाएं खोलकर विभाग को प्रस्ताव भेजे जाएं, ताकि उन्हें अनुदान

और अन्य सहायता मिल सके।

इससे पहले सदस्य के मूल प्रश्न के लिखित जवाब में गोपालन मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का विधान सभा क्षेत्र वर के उपखण्ड मुख्यालय वर में गौशाला खोलने का विचार नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदेश में गौशालाओं की स्थापना एवं संचालन स्वयं सेवी संस्था/ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

उन्होंने बताया कि राजस्थान गौसंरक्षण एवं संवर्धन निधि नियम, 2016 संशोधित 2021 के अंतर्गत पात्र गौशालाओं में संधारित गौवंश को चारा-पानी एवं पशु आहार हेतु सहायता राशि तथा आधारभूत परिसम्पत्तियों के निर्माण हेतु अनुदान दिये जाने का प्रावधान है।

उन्होंने जानकारी दी कि वर विधानसभा क्षेत्र में ग्राम पंचायत गौशाला एवं पशु आश्रय स्थल जनसहभागिता योजनान्तर्गत गौशाला खोलने के लिए विगत तीन वर्षों में स्थानीय जन प्रतिनिधियों तथा सामाजिक संगठनों द्वारा आवेदन नहीं किया गया है।

कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की समीक्षा बैठक

# कृषक कल्याण की दिशा में बजट घोषणाओं का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया : डॉ. मीणा



जयपुर। कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों की खुशहाली और कृषि विकास के लिए विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का प्रभावी संचालन कर रही है। उन्होंने विभाग से संबंधित बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के निर्देश दिए, ताकि सरकार की मंशा के अनुरूप किसानों को योजनाओं का समुचित लाभ सुनिश्चित किया जा सके।

कृषि मंत्री पंत कृषि भवन, जयपुर में कृषि एवं उद्यानिकी विभाग की योजनाओं, कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की समीक्षा कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं 2025-26 की बजट घोषणाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की।

कृषि मंत्री ने कहा कि उन्नत एवं वैज्ञानिक खेती अपनाने वाले प्रगतिशील किसानों के अनुभव अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत हैं, जिनसे उत्पादन एवं आय में वृद्धि संभव है। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिले में प्रगतिशील किसानों के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से

आयोजित किए जाएं, ताकि किसान फसल चक्र के अनुरूप उन्नत किस्मों के चयन, फसल प्रबंधन तथा खाद-बीज के संतुलित उपयोग की तकनीकों को अपनाकर उत्पादन बढ़ा सकें।

उन्होंने कहा कि कस्टम हायरिंग सेंटर लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए ट्रैक्टर,

कल्टीवेटर, थ्रेशर सहित आधुनिक कृषि यंत्रों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन केंद्रों की स्थापना एवं संचालन में और अधिक सुगमता तथा गति लाने के निर्देश देते हुए उन्होंने किसानों को अधिकाधिक लाभ पहुंचाने पर विशेष जोर दिया।

कृषि मंत्री ने किसानों की समस्याओं के त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण के लिए प्रत्येक जिले में जिला स्तरीय जन शिकायत निवारण बैठक के नियमित आयोजन के निर्देश दिए। साथ ही बजट घोषणाओं के तहत प्रदेश में स्थापित किए जा रहे सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में अनुसंधान एवं नवाचार को

प्रोत्साहित करने पर बल दिया, ताकि किसानों को कृषि में नवीन तकनीकों की जानकारी एवं लाभ प्राप्त हो सके।

बैठक में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, बूंद-बूंद एवं फव्वारा सिंचाई, ग्रीनहाउस, शैडनेट एवं पॉलीहाउस से संबंधित अनुदान योजनाओं की समीक्षा करते हुए कृषि मंत्री ने अधिकाधिक किसानों को इन योजनाओं से जोड़ने के निर्देश दिए।

बैठक में प्रमुख शासन सचिव कृषि श्रीमती मंजू राजपाल ने विभागीय अधिकारियों को किसानों के हित से जुड़े निर्णयों में तेजी लाने के निर्देश दिए। बैठक में आयुक्त कृषि सुश्री चिन्मयी गोपाल सहित कृषि विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे, जबकि जिलों के अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक से जुड़े।

मत्स्य कृषक संवाद कार्यक्रम

## मत्स्य पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का प्रभावी माध्यम : श्री बेदम



जयपुर। मत्स्य पालन से जुड़े कृषकों तथा मछुआरों की समस्याओं के समाधान तथा मत्स्य क्षेत्र के समग्र विकास के उद्देश्य से मत्स्य कृषक संवाद कार्यक्रम का आयोजन टोंक रोड स्थित आरएलडीबी के सभागार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जवाहर सिंह बेदम, राज्य मंत्री, मत्स्य ने की। कार्यक्रम में शासन सचिव, पशुपालन एवं मत्स्य डॉ. समित शर्मा तथा निदेशक श्रीमती संचिता विश्वासी सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं बड़ी संख्या में मत्स्य कृषक और मछुआरे उपस्थित थे।

मत्स्य राज्य मंत्री श्री जवाहर सिंह बेदम ने कहा कि मत्स्य पालन आज ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का एक प्रभावी माध्यम बन चुका है। राज्य सरकार मत्स्य कृषकों और मछुआरों के हितों की रक्षा तथा उनकी आय बढ़ाने की दिशा में प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। श्री बेदम ने कहा कि इस प्रकार के कृषक संवाद कार्यक्रम सरकार और मत्स्य कृषकों के बीच सीधा संवाद स्थापित करते हैं, जिससे जमीनी स्तर की वास्तविक समस्याओं को समझकर प्रभावी नीतियां बनाने में मदद मिलती है। उन्होंने मत्स्य कृषकों से नई तकनीकों को अपनाने और विभागीय योजनाओं का अधिकतम लाभ उठाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक तकनीक,

गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज, मत्स्य आहार की उपलब्धता तथा तालाब निर्माण जैसी सुविधाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। मत्स्य कृषकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकारी योजनाओं के माध्यम से अनुदान, प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराया जा रहा है। राज्य मंत्री ने मत्स्य बीमा योजना, ऋण सुविधा एवं विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल देते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि मत्स्य कृषकों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर निराकरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने विभाग को किसानों को विपणन की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए पोर्टल बनाने के निर्देश दिए जिस पर देश भर की मछली मंडियों की पूरी जानकारी उपलब्ध रहे। उन्होंने जयपुर में मत्स्य मंडी स्थापित करने के लिए भी कृषकों को आश्वासन दिया।

इस अवसर पर शासन सचिव मत्स्य विभाग डॉ. समित शर्मा ने कहा कि मत्स्य पालन क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन संभावनाओं के मद्देनजर मत्स्य कृषकों के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाबद्ध रूप से कार्य कर रही है।

विभाग की निदेशक श्रीमती संचिता विश्वासी ने प्रस्तुति के माध्यम से विभाग की योजनाओं अनुदान एवं तकनीकी सहायता और कार्यक्रमों की जानकारी दी।

## सर्वोत्तम गुणवत्तावाली जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला - सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।

(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानों आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेक्टर  
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)  
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो एक्सेल प्लस  
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2  
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो लाईन सुपर  
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2  
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज



जैन टर्बो लाईन - पीसी  
क्लास 2  
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी  
1, 2 व 2 (0.33, 0.38 मिमी) - क्लास 1 व 2  
साईज - 12, 16, 20 मिमी



जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स  
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी



नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटिंग में उपलब्ध



दूरभाष: 0257-2258011; 6600800  
टोल फ्री : 1800 599 5000  
ई-मेल: jis@jains.com; वेबसाइट: www.jains.com



सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!